भगतसिंह की वापसी

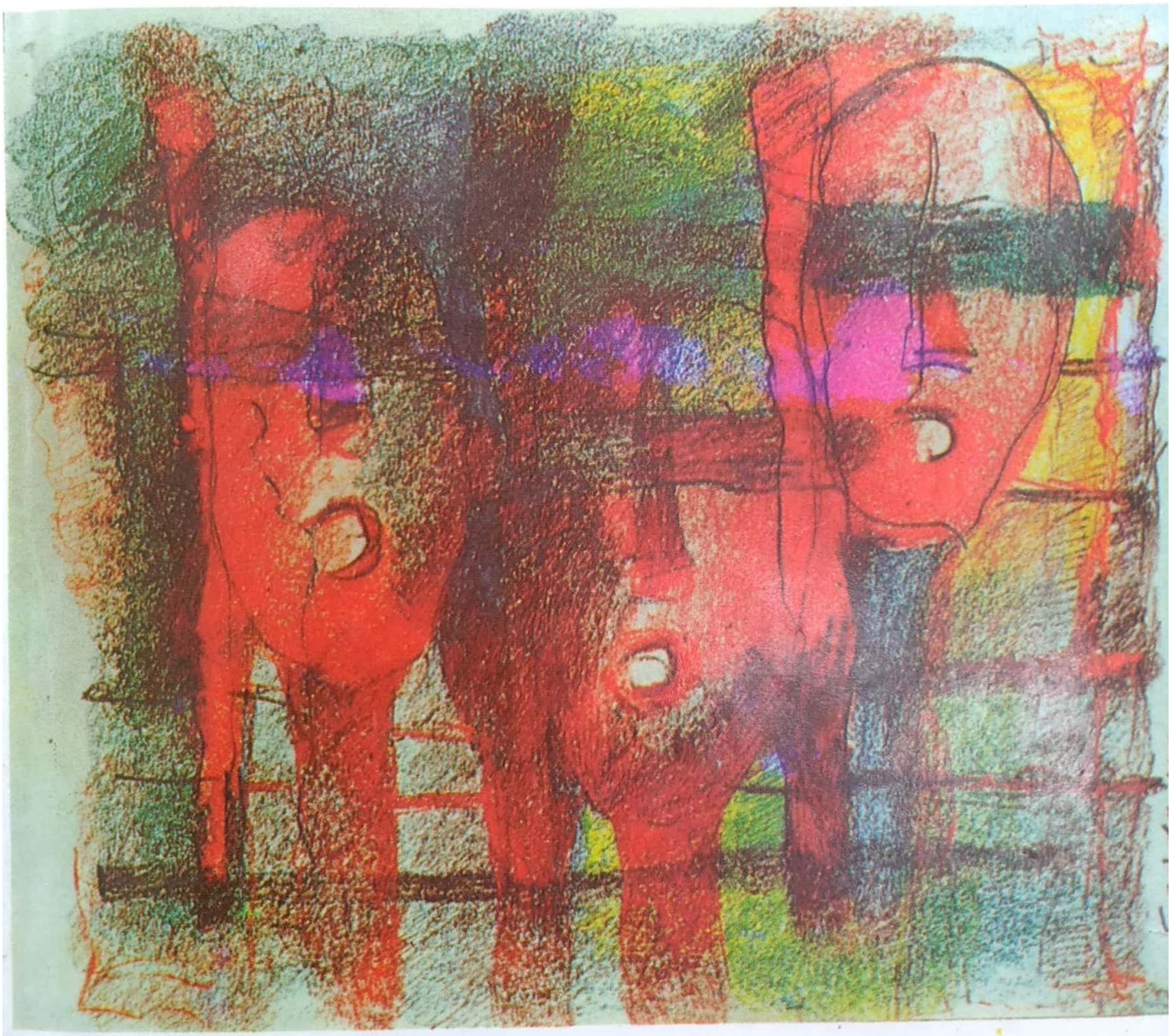

सागर सरहदी

भगतसिंह की वापसी

सागर सरहदी

क्रांतिकारी इतिहास को दबा रखने या अधिक प्रकाश में न आने देने की सारी साजिशों के बावजूद, आजादी के बाद जन्मी पीढ़ियों में भी शायद ही कोई होगा, जिसे भगतसिंह और उसके कारनामों की थोड़ी-बहुत जानकारी न हो। भारतमाता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए सिर्फ तेइर्स वर्ष की अवस्था में अपने प्राणों की बलि देनेवाला यह नौजवान थोथी भावुकता से प्रेरित नहीं था बल्कि दुनिया के महान चिंतकों और बुद्धिजीवियों की रचनाओं के गहन अध्ययन से उसने एक तर्कसिद्ध वैज्ञानिक दृष्टि प्राप्त कर ली थी। यही कारण है कि वह क्रांतिकारिता को वैज्ञानिक चिंतन का ठोस आधार दे सका, और क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में यह उसका एक बड़ा अवदान है।

इप्टा के साथ सक्रिय रहे रंगकर्मी, लेखक और सुप्रसिद्ध फिल्मकार सागर सरहदी का यह नाटक शहीदे-आज़म भगतसिंह की कुछ ऐसी जीवन-छवियाँ हमारे सामने प्रस्तुत करता है, जिनके माध्यम से हम उस महान क्रांतिकारी के अविस्मरणीय बलिदान को ही नहीं, उसके संपूर्ण जीवन-दर्शन को आत्मसात कर सकते हैं। इतना ही नहीं, नाटककार की सफलता इस बात में है कि उसने नाटक में अंकित सारे प्रसंगों को देश की समसामयिक परिस्थितियों का आईना बना दिया है, लेकिन ऐसा करते समय वह कहीं भी भगतसिंह की विचारधारा से अलग नहीं हुआ है।

भगतसिंह की वापसी

सागर सरहदी

पंजाबी से अनुवाद

मंजीत भाटिया

मिलिन्द प्रकाशन
4-3-178/2, कन्दास्वामी बाग,
हनुमान व्यायामशाला की गली,
सुल्तान बाजार, हैदराबाद-500 195.
फोन : 593159/ 506615

सारांश प्रकाशन

सारांश प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

प्रधान कार्यालय : 142-ई, पॉकेट-4, मयूर विहार फेज-1. दिल्ली-110091

फोन : + 91-11-2713253

शाखा : 17, अमृता माल (पहली मंजिल), 6-3-1110. बेगमपेट, हैदरावाद-500016

फोन : +91-40-3300711

सर्वाधिकार © सागर सरहदी

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, घुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

पहला संस्करण : 1999

मूल्य : 75.00

BHAGAT SINGH KI VAPASI

Play by Sagar Sarhadi

Tr. by Manjit Bhatia

आवरण : सुबाचन यादव

लेजर कंपोजिंग : प्रांइम कॉम्पग्राफिक्स, 188 एफ /1 मयूर विहार-1, दिल्ली-110091

त्रिवेणी ऑफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 द्वारा मुद्रित

नई दिशा की ओर

सागर सरहदी का नाम पंजाबी नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में उतना ही प्रसिद्ध है जितना कि फ़िल्म जगत में। उनका नाटक ***मसीहा*** पिछले दस-बारह वर्षों से लगातर पंजाब में कहीं न कहीं, कभी न कभी खेला जाता रहा है। उसकी नाटकीयता से भरपूर पकड़ दर्शकों को बेधती है। पंजाब के बँटवारे की याद दिलानेवाली यह दर्दनाक झाँकी पंजाब के इतिहास का एक अंग बनकर दर्शकों की आँखें सजल करती है।

भगतसिंह की वापसी नाटक में सागर सरहदी ने एक बार फिर पंजाब के इतिहास का ही नहीं बल्कि पूरे भारत के इतिहास का एक पन्ना खोलकर दर्शकों के सामने रखा है, ऐसा पन्ना जो पाँच नदियों की धरती के साथ-साथ समस्त भारत के वासियों का सिर फ़ख्र से ऊँचा करता है। इस ऐतिहासिक पन्ने को सागर सरहदी ने एक नए अंदाज़ और नई शैली में पेश किया है।

हमारे नाटकों में आमतौर पर यथार्थ को उकेरने की कोशिश की जाती है। इस नाटक के आरंभ में भगतसिंह कहता है : मैं भगतसिंह नहीं हूँ। मैं जो आपके सामने खड़ा हूँ, एक कलाकार हूँ – एक्टर। जो शब्द मैं बोल रहा हूँ, मेरे नहीं, नाटककार के हैं। लेकिन इन विचारों की रूह भगतसिंह की है। मैं एक कल्पना हूँ। मेरा जिस्म उस कल्पना को साकार कर रहा है। नाटककार ने मुझे नया जन्म दिया है।

इस नाटक में कल्पना और यथार्थ की आँखमिचौली है। कल्पना यथार्थ बन जाती है, और यथार्थ कल्पना में ढल जाता है। भगतसिंह और उसकी माँ के बीच होनेवाला वार्तालाप कोरी कल्पना है, लेकिन उसमें हृदय को झिंझोड़ देनेवाले कठोर यथार्थ की सी क्षमता है। एक ओर माँ का दिल है, जिसे पुत्र का ब्याह रचाने का चाव है, सूने आँगन में शादी के गीत गवाने और हँसी-ठिठोली देखने की तमन्ना है। दूसरी तरफ पुत्र का हठ है; वह जीती-जागती हुस्नपरी के स्थान पर एक कल्पना के ऊपर जान कुर्बान करने के लिए बेचैन है। भगतसिंह आपनी माँ की आँखें बंद करवाकर उसकी झोली में कभी हवा भर

देता है, तो कभी मुट्ठी भरकर मिट्टी डाल देता है। यह सब स्वप्न-जैसा है, हवा में लिखे शब्दों के समान। लेकिन यथार्थ भी है, जलियाँवाले बाग़ में बहे लहू के समान।

फिर एक ओर अंग्रेज़ों का जुल्म, ज़्यादती और वहशत है, तो दूसरी ओर सिर पर कफ़न बाँधे खड़े शूरवीरों की दृढ़ता है। उनके दिल में क़ातिल के बाजुओं का ज़ोर आज़माने की लालसा है; आज़ादी की ख़ातिर मर-मिटने की तमन्ना है। इस प्रकार इस नाटक के कथानक में आग की लपटों की तरह दहकता हुआ कार्य है और साम्राज्यवादी मूल्यों को बहाकर ले जानेवाली आँधी– गुमनामी के अँधेरे में रिसते ज़ख़्मों को पालनेवाले चीते जैसा विद्रोह, जो अपने शिकारी को कच्चा चबा जाने के लिए वक़्त का इंतज़ार कर रहा हो।

इस नाटक में अंगारों पर चलनेवाले इनक़्लाबी जब मिल बैठते हैं, तो उनके शब्दों से आग बरसती है। कोई काल-कोठरी, कोई कालापानी, कोई यातना, कोई मुसीबत उन्हें इनक़्लाब की राह पर बढ़ने से नहीं रोक सकती।

रंगमंच की दृष्टि से भी इस नाटक में अनोखे प्रयोग हैं। साइमन और टोडी को गंभीर रंगों में चित्रित करने की बजाय नाटककार ने मदारी और जमूरे की लोकनाट्य शैली का सहारा लिया है। भारतमाँ की आज़ादी के लिए जूझने का प्रण करते समय इनक़्लाबी जवान ऐसे प्रतीत होते हैं, जैसे किसी धार्मिक समारोह में अपनी आंतरिक श्रद्धा निवेदित कर रहे हों। करामाती पक्ष यह है कि हिंदू, मुसलमान, सिक्ख और ईसाई – इस नाटक में सबका धर्म एक बन जाता है।

भगतसिंह को जेल में यातना देनेवाला दृश्य इतना कलात्मक है कि लगता है किसी चित्रकार ने शब्दों के ब्रुश से इनक़्लाब के सत्य को चित्रित कर दिया है। भगतसिंह को दर्द का कोई अहसास नहीं है। शरीर का कोई हिस्सा सुन्न हो जाने का भी उसे पता नहीं है। ज़िंदगी का अहसास उसके दिमाग़ में एक शोले की तरह रौशन है, जिसे कोई हवा नहीं बुझा सकती।

अदालत में भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव का मुक़दमा अनोखी शिल्प-शैली में लिखा गया है। भगतसिंह और उसके साथी कठघरे में खड़े हैं, अदालत की कार्यवाही चल रही है। भगतसिंह 'इनक़्लाब ज़िंदाबाद' का नारा लगाता है। यह नारा चारों दिशाओं में गूँजता है, अदालत की दीवारें काँप जाती हैं, ढह जाती हैं, और दृश्य ऐसा इनक़्लाबी पलटा खाता है कि राजगुरु और सुखदेव जजों की कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। भगतसिंह प्रॉसीक्यूटर बन जाता है और अंग्रेज़ जज पहुँच जाते हैं मुज़रिम के कठघरे में। इस दृश्य की पृष्ठभूमि फ़िल्मी है और इसकी प्रस्तुति के लिए भी स्क्रीन रंगमंच से बेहतर माध्यम है। फिर भी सूने रंगमंच पर यह दृश्य बिजली की आँखमिचौली से अभिनीत हो सकता है।

भगतसिंह को दूल्हा बनाने के लिए जब भारत की सभी बहनें दर्दभरी आवाज़ में उसका विवाह-गीत गाती हैं, तो एक अदभुत कारुणिक दृश्य दर्शकों को मर्माहत कर जाता है।

रंमगंच की दृष्टि से इस नाटक में आधुनिक रंगमंच की सभी शैलियों का मिश्रण है। यह नाटक पंजाबी रंगमंच की नई दिशाओं का सूचक है। मुझे विश्वास है कि देश के हर कोने में यह नाटक खेला जाएगा और नौजवानों के दिलों की धड़कन बनेगा।

2 फरवरी 1983

कपूर सिंह घुम्मन

... पिस्तौल और बम इनक़लाब नहीं लाते, बल्कि इनक़लाब की तलवार विचारों की सान पर तेज़ होती है और यही चीज़ थी जिसे हम प्रकट करना चाहते थे। हमारे इनक़लाब का अर्थ पूँजीवादी युद्धों की मुसीबतों का अंत करना है।

– हाईकोर्ट में भगतसिंह का बयान

जब गतिरोध की स्थिति लोगों को अपने शिकंजे में जकड़ लेती है, तो किसी भी प्रकार की तब्दीली से वे हिचकिचाते हैं। इस जड़ता और निष्क्रियता को तोड़ने के लिए एक क्रांतिकारी स्पिरिट पैदा करने की ज़रूरत होती है अन्यथा पतन और बर्बादी का वातावरण छा जाता है। लोगों को गुमराह करनेवाली प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ जनता को ग़लत रास्ते पर ले जाने में सफल हो जाती है। इससे इनसान की प्रगति रुक जाती है और उसमें गतिरोध आ जाता है। इस परिस्थिति को बदलने के लिए यह ज़रूरी है कि क्रांति की स्पिरिट ताज़ा की जाए ताकि इनसानियत की रूह में एक हरकत पैदा हो।

– भगतसिंह : फाँसी पर चढ़ने से कुछ समय पहले

पहला अंक

मंच पर रौशनी होती है। भगतसिंह फुटलाइट के पास खड़ा दर्शकों से बातें कर रहा है। उसके चेहरे पर संजीदगी है। आवाज़ में ठंडापन।

भगतसिंह : मैं एक ख़याल हूँ। तुम्हें याद होगा, 23 मार्च 1931 को मुझे फाँसी दी गई थी। मेरा जिस्म पाँच तत्वों में बदल गया था। अब मेरे और तुम्हारे बीच सिर्फ़ मौत की वादी है। मैं तुम्हें नहीं देख सकता, लेकिन तुम मुझे देख सकते हो, क्योंकि मैं भगतसिंह नहीं हूँ, सिर्फ़ एक कल्पना हूँ। मेरा जिस्म उस कल्पना को साकार कर रहा है। नाटककार ने मुझे एक बार फिर आपके समाने खड़ा कर दिया है। वह कहता है कि तुम उस विशेष बात के बारे में कुछ नहीं जानते या उस बात को अच्छी तरह महसूस नहीं करते, जो वह कहना चाहता है। मैंने, यानी भगतसिंह ने ही जान-बूझकर वह बात किसी को नहीं बताई थी। लेकिन इस तरह किसी शर्त पर या किसी के दबाव में दूसरी घटनाओं का सहारा लेकर शायद मैं भी बात नहीं करता। इसलिए नाटककार नू मुझे नया जन्म दिया है।

यह तो आप जानते हैं कि मैं भगतसिंह नहीं हूँ। मैं जो आपके सामने खड़ा हूँ, एक कलाकार हूँ – एक्टर। जो विचार मैं प्रगट कर रहा हूँ, जो शब्द मैं बोल रहा हूँ, वे मेरे नहीं हैं; नाटककार के हैं, लेकिन इन विचारों की रूह भगतसिंह की ही है। बल्कि मेरी रूह भी भगतसिंह की है। अब, जब मैं आपसे

मुख़ातिब हूँ, मेरा कायाकल्प हो रहा है। मैं वही हिलेरें महसूस कर रहा हूँ, जो शहीद भगतसिंह का नाम लेते ही महसूस होने लगती हैं।

धीरे-धीरे बोलने का अंदाज़ बदलता है, उसमें गंभीरता आ जाती है, शिद्दत महसूस होती है।

मैं एक अछूता ख़याल हूँ, जिसे अत्यंत पवित्र ... सत्य की क्रांति ने जन्म दिया है। वे दिन ऐसे थे, जैसे फ़िज़ा में लू चल रही थी, बगोले गर्दिश कर रहे थे। जज़्बाती आँधियाँ चल रही थीं। इस देश में अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ एक लावा उबल रहा था – अंग्रेज जो शासक थे, जिन्होंने ज़बर्दस्ती हमारी धरती पर क़ब्ज़ा कर लिया था। लोगों में आज़ादी प्राप्त करने की इच्छा इतनी प्रबल थी, जैसे हम आग का इंतज़ार कर रहे हों। हमने दिलों में नफ़रत के नाग पाल लिए थे, जो हर घड़ी, हर क्षण, हर पल हमें डसते थे और उस ज़हर के नशे में डूबे हुए हम जान हथेली पर लिए अपना वतन आज़ाद करवाने को मचल रहे थे, बेक़ाबू हो रहे थे, लहरों की तरह, जब नदी में बाढ़ आ जाती है।

मैं और मेरे साथी, उस समय और उससे पहले इस देश में ही नहीं, दूसरे देशों में भी कमर कस रहे थे। एक ही जज़्बा था – आज़ादी। एक ही उद्देश्य था – आज़ादी! मैं और मेरे साथी – सुखदेव, राजगुरु, भगवतीचरण, चंद्रशेखर आज़ाद, बटुकेश्वर दत्त, विजयकुमार सिन्हा, अजय घोष, जतिन दास और यशपाल ... और हमारे अन्य साथी ... नामवर और गुमनाम, गिने-अनगिने, हिंदुस्तान के हर हिस्से में उठकर खड़े हो गए थे। गंगा, जमुना, रावी, झेलम, ब्रह्मपुत्र और अनगिनत नदियों के पानी ने हमारे मन में आज़ादी की रूह फूँकी। उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम में बहती हवाओं ने हमारे विचारों को उकसाया और हमने कहा – "हे माता, हमारी पवित्र जन्मभूमि, तुम्हारी मिट्टी से हमारा जिस्म बना है, तुम्हारी हवाओं में हम साँस लेते है, हमारी आँखें तुम्हारी फ़िज़ा में घुलती हैं। हम तुम्हारे हुक्म के पाबंद हैं, तुम्हारे कर्ज़दार हैं। हमें गर्व से देखो, हमें आशीर्वाद दो और हमारी आहुति क़बूल करो।"

क्षणिक विराम

और फिर हम समय के साक्षी बनने के लिए मैदान में कूद पड़े।

अँधेरा

रौशनी होती है।

भगतसिंह के घर का आँगन। भगतसिंह की माँ कढ़ाई कर रही है। भगतसिंह प्रवेश करता है। वह माँ की ओर देखता है, मुस्कुराता है। तभी माँ की निगाहें भगतसिंह की तरफ उठती हैं और उसे एहसास होता है कि भगतसिंह उसे देख रहा है। वह भगतसिंह को भरपूर निगाहों से देखती है।

माँ : आ गया मेरा कमाऊ बेटा !
भगत : हाँ माँ !

वह जल्दी से कपड़ा नीचे रखती है, अपनी झोली भगतसिंह के आगे फैलाती है ...

माँ : ला, डाल दे मेरी झोली में, जो भी कमाकर लाया है, चल जल्दी कर।
भगत : पहले तुम अपनी आँखें बंद करो।
माँ : भाग तो नहीं जाएगा?
भगत : नहीं तो।
माँ : तेरा क्या पता लगता है, अभी है, अभी ग़ायब। हमेशा धोखा दे जाता है तू मूझे।
भगत : तेरी कसम माँ, तू बंद कर न आँखें।
माँ : ले ...

माँ आँखें बंद करती है।

भगत : अब अपनी झोली भी बंद कर ले।
माँ : ले ...

वह झोली भी बंद कर लेती है।

भगत : अब खोल आँखें।

वह आँखें खोलती है।

भगत : देख!

वह जल्दी से आँखें खोलती है।

भगत : जल्दी-से नहीं, धीरे-से और थोड़ी-सी खोल, नहीं तो मेरी सारी कमाई हवा हो जाएगी।

माँ : यह तो ख़ाली है।

भगत : खाली नहीं है माँ, इसमें हवा भरी है।

वह हँसता है, माँ उसकी शरारत पर मुस्कुराती है।

माँ : मेरा भाग्यशाली बेटा!

भगत : देखना माँ, एक दिन इतनी कमाई करके लाऊँगा कि तू दोनों हाथों से लुटाएगी, तो भी ख़त्म नहीं होगी।

माँ : वह दिन कब आएगा, मैं भी तो सूनूँ!

भगत : बस, बहुत जल्दी! हमें ज़्यादा फ़ुरसत नहीं। अब तक हमारी सारी दौलत ग़ैर लूटते रहे हैं। मैंने और मेरे दोस्तों ने रावी के किनारे बैठकर फ़ैसला किया है कि अब हमारा वक़्त है। यह बेइंसाफ़ी और नहीं चलेगी।

माँ : भगत, यह तू क्या कह रहा है?

भगत : कल की बात आज बता रहा हूँ!

माँ : कभी-कभी तेरी बातों से मुझे डर लगने लगता है।

भगत : लेकिन माँ, होनी को कौन टाल सकता है! और फिर वह बात जो हवा पर लिखी हो, उसे कौन मिटा सकता है! वह तो हवा के साथ फैलती रहेगी।

माँ : पूरी बात बता भगत!

भगत : जैसे तू जानती नहीं!

माँ : जानती हूँ, लेकिन वह सब कहना तो दूर, सोचते हुए भी मुझे डर लगता है।

भगत : मेरी तरह विश्वास कर ले, फिर कभी डर नहीं लगेगा।

माँ : नहीं भगत, नहीं!

भगत : अब यह मेरे बस में थोड़े ही है।

माँ : बस तू घर से बाहर न जाया कर।

भगतसिंह ज़ोर से हँसता है।

हँस रहा है न! तू नहीं जानता; मेरा जी घबराने लगता है। कई बार तो ऐसा लगने लगता है कि तू कभी लौटकर नहीं आएगा।

भगत : तू बहुत भोली है, माँ! भगतसिंह तेरा बेटा है, पंजाब की धरती पर उसने जन्म लिया है। पाँच नदियों का पानी पिया है उसने। गुरवाणी पढ़ी है। वह अपने गुरुओं के जी-तोड़ संघर्ष के बारे में जानता है। उनके आशीर्वाद से यहाँ का हर नौजवान बेख़ौफ़ है, निडर है, जान क़ुर्बान करने को आतुर है ...

माँ : ऐसे बोल रहा है, जैसे कोई धार्मिक पुस्तक पढ़ रहा हो!

भगतसिंह आगे बढ़ता है, माँ के पाँव छूकर उसके क़दमों में बैठ जाता है।

भगत : सब तेरे इन चरणों की धूल है।

माँ उसकी पीठ सहलाती है, मुस्कुराती है, जैसे सपना देख रही हो।

माँ : जब तेरा जन्म हुआ था तब बिजली चमकी थी। उससे सारा घर रौशन हो गया था। अब भी कई बार मेरी आँखों के सामने बिजली चमक जाती है, उसमें तेरा चेहरा देखती हूँ, जैसे तू मुस्कुरा रहा हो।

भगत : माँ, मैं तेरी सारी मुरादें पूरी करूँगा।

माँ : यह तो वाहेगुरु ही जानता है, कितनी पूरी करेगा और कितनी अधूरी रखेगा। जो पूरी हो जाएँगी, मुझे शांति देंगी, मेरा मान बढ़ाएँगी। जो पूरी नहीं होंगी, उनके लिए मेरी छाती तड़पती रहेगी। कभी सोचती हूँ कि मैंने अपना दिल पत्थर कर लिया है, बस, सब्र कर लेती हूँ हर बात पर। इस पर गर्व भी होता है। कभी सोचती हूँ, सुख का बाँध टूट क्यों नहीं जाता! मुझे एक माँ, एक पत्नी की किस्मत क्यों नहीं मिली? मैं दहाड़ें मारकर रो क्यों नहीं सकती? मैं अपने हाथों से अपनी छाती क्यों नहीं पीट सकती? तेरे बापूजी देश के उद्धार के लिए उम्र-भर जेलों में रहे, और मैं जेलों के दरवाज़े खटखटाती रही। उस घड़ी का इंतज़ार करती रही, जब मैं उन्हें जी भरकर देख सकूँगी। कभी देखती तो मन भर आता था, जेलों की सख़्ती बर्दाश्त करते उनकी जान आधी रह गई थी।

क्षणिक विराम

फिर तेरा चाचा यहाँ रहा तो पुलिस उसका पीछा करती रही। उसे हर वक़्त एक ही चिंता रहती कि देश कब आज़ाद होगा। और मुझे...रात-दिन यह चिंता रहती कि कब वह मेरे सामने बैठकर रोटी के दो निवाले खाएगा, कब मेरे सामने एक बालक-जैसा चैन की नींद सोएगा। फिर वह जलावतन हो गया। कहाँ होगा वह? कैसा होगा वह ? (*रोने लगती है।*)

भगत : इनक़लाबी के लिए देश क्या और परदेश क्या? और यह देश जो हमारा अपना है, यहाँ साँस लेना भी मुश्किल है। मैं जानता हूँ, जब तक देश आज़ाद नहीं होगा, चाचाजी पर क्या बीतेगी!

माँ : इसीलिए कहती हूँ, तू मेरे पास रहा कर, मेरी आँखों से कभी ओझल नहीं होना।

भगत : माँ, तू मुझपर कोई पाबंदी तो नहीं लगाएगी?

माँ : पांबदी तो जरूर लगाऊँगी। ऐसे नहीं मानेगा, तो तेरे पाँव में ब्याह की बेड़ियाँ डाल दूँगी।

भगत : ब्याह करवाओगी मेरा?

माँ : देख तो आँगन कितना सूना है! बहू आएगी तो पूरे घर में उसकी हँसी खनखनाएगी, सावन में वह झूला झूलेगी, नाचेगी, गाएगी। तू बाहर रहेगा, तो मैं उसे देख-देखकर जी लूँगी।

भगत : माँ, तुझे बताऊँ! मैंने तो दुल्हन देख भी ली है।

माँ : सच्च!

भगत : जब कहेगी, तुझे दिखा दूँगा।

माँ : सुंदर है न!

भगत : हाँ, बहुत सुंदर है!

माँ : ख़ानदान कैसा है?

भगत : बहुत पुराना, बहुत अच्छा, बहुत बड़ा और ऊँचा।

माँ : कैसे मिली तुझे?

भगत : अचानक मिल गई!

माँ : कहाँ?

भगत : मैं गली से गुज़र रहा था, अपने ही ख़यालों में खोया हुआ। ऐसे देख रहा था जैसे कुछ न देख रहा होऊँ। उसने बड़े प्रेम से, बड़े स्नेह और गर्व से मेरी तरफ़ देखा। धीरे-धीरे मेरी चेतना जैसे लौटी। पहचान गया मैं उसे।

माँ : सच्च?

भगत : हाँ! लेकिन उसके हाथों और पाँवों में बेड़ियाँ थीं।

माँ : वाहेगुरु!

भगत : माँग में राख भरी हुई थी।

माँ : ना बेटा, ऐसा न कह!

भगत : उसके कपड़े चीथड़ा-चीथड़ा हो रहे थे।

माँ : उसकी यह हालत किसने की?

भगत : यही बात मैंने उससे पूछी।

माँ : क्या कहा फिर उसने?

भगत : वह हँसने लगी।

माँ : हँसने लगी?

भगत : वह हँसी भी उसी तरह, जैसे तुम हँसती हो! वह देखती भी तुम्हारी ही तरह थी। उसके बोल भी ऐसे ही थे जैसे तुम बोलती हो।

माँ : (*रोकर निढाल होते हुए*) वह कौन थी भगत, बता बेटा कौन थी? इतनी दुखियारी, इतनी बेचारी, इतनी बेबस, इतनी मजबूर (*चीखते हुए*) जल्दी बता भगत, कौन थी वह?

भगत : वह? वह मेरे देश की धरती थी माँ।

माँ सिसकती हुई रोने लगती है।

मैंने उससे पूछा, तुझे किसने क़ैद किया है? वह कहने लगी, अपनी माँ से पूछ। मैंने पूछा, तेरी माँग में राख क्यों है? कहने लगी, अपने बापू से पूछ। मैंने पूछा, तू इतनी बेबस, इतनी निढाल, इतनी लाचार क्यों है? कहने लगी, अपने चाचा से पूछ। उस समय मेरा ख़ून खौल उठा। बदन लावा हो गया। मैंने कहा, मेरी ओर देख, मेरी आँखों में झाँककर देख! तू भगतसिंह को पहचान, तेरा शक़ दूर हो जाएगा। अब तू बेबस नहीं रहेगी। तेरी ये बेड़ियाँ ... लोहे की बेड़ियाँ ... मैं अपने दाँतों से काट दूँगा। मैं तुझे ख़ून में स्नान करवाऊँगा। यह ख़ून मुसलमान, हिंदू, सिक्ख, ईसाई – हर मजहब, हर जाति का होगा। ये सब तेरे लिए कुर्बानी देंगे। तुझे इस ख़ून में नहलाया जाएगा, चारों वेदों का पाठ होगा। कुरान पढ़ी जाएगी, गुरवाणी का पाठ होगा, तू पवित्र हो जाएगी, आज़ाद हो जाएगी। ... फिर माँ, उसने बड़े दुलार से मुझे देखा ... बड़े गर्व से ... और बहुत प्यार से कहा – "मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगी।"

क्षणिक विराम

वह मेरी राह देख रही है।

क्षणिक विराम

मैं तेरा आशीर्वाद लेने आया हूँ।

क्षणिक विराम

वह माँ के चरण स्पर्श करता है, माँ उसे उठाती है। आँखों में आँसू हैं, होठों पर मुस्कुराहट है। वह उसका माथा चूमती है।

माँ : मेरा भाग्यशाली बेटा! आया भी है तो आशीर्वाद लेने। तू जा रहा है, लेकिन यह नहीं बताता, लौटेगा कब! लौटेगा भी या नहीं! यह भी नहीं बताता कि युद्धभूमि पर जा रहा है! सिपाही की तरह सेना में जा रहा है! लेकिन मैं यह सब जानते हुए भी मानने के लिए तैयार नहीं। जो सपने मैंने तेरे लिए देखे थे, उन्हें दिन की रौशनी में देखा करूँगी। रोज़ शाम ढले दहलीज़ पर बैठकर तेरी राह देखा करूँगी, जैसे तू लौटनेवाला हो! गुरद्वारे जाकर तेरे लिए प्रार्थना करूँगी कि तू अपने मक़सद में कामयाब हो। देश/परदेश हर जगह तेरा नाम हो। चाँद-तारों की तरह तेरा नाम चमके। अपने लिए प्रार्थना करूँगी कि मेरी उम्र भी तुझे लग जाए। मैं तुझसे पहले मौत का मुँह देखूँ और तू मेरी अर्थी को काँधा दे।

भगतसिंह उसके मुँह पर हाथ रख देता है। माँ की आँखों में आँसू थे, जो बह निकलते हैं। माँ काफ़ी देर तक रोती रहती है।

कुछ पल अँधेरे के बाद रौशनी होती है।

चाँद की हल्की चाँदनी में सारे इनक़लाबी क़िला फ़िरोज़शाह कोटला में बैठे हैं। इनमें भगतसिंह, भगवतीचरण, धन्वंतरी, सुखदेव, राजगुरु, विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा आदि शामिल हैं। चंद्रशेखर आज़ाद बेचैनी से टहल रहे हैं।

भगवती : हमारा काम और भी मुश्किल हो गया है।

विजय : अंग्रेज हमें क़ातिल, हत्यारे, देशद्रोही समझते है, वे हमारे ही देश में हमारे

कारनामों की निंदा कर रहे हैं।

सुखदेव : एक बात तो है कि आज फ़िज़ा में गर्मजोशी है। इससे पहले तो कभी-कभार एक-आध इनक़लाबी ही उठता था, ब्रिटिश हुकूमत को ललकारता था और फाँसी के फंदे से झूल जाता था। आज इनक़लाबियों के जत्थे तैयार हैं। पूरब और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण – हर दिशा में हिंदुस्तान का हर नौजवान कुर्बानी देने के लिए तड़प रहा है।

भगवती : आज़ादजी, आप बागडोर सँभालो, हमें हुक्म करो ताकि हम आपके अरमान पूरे करने के लिए जी-जान की बाज़ी लगा दें।

क्षणिक विराम

आज़ाद : अजीब परिस्थिति है आज। मैं जब चौदह वर्ष का था, थानेदार ने मेरी पीठ पर बारह बेंत मारे थे। मेरे जिस्म पर बारह नीली लकीरें उभर गई थीं। थोड़ा-थोड़ा खून भी रिस रहा था। मैं ज़ख़्मी चीते की तरह गुमनाम अँधेरे में, जंगलों में, खंडहरों में अपने ज़ख़्मों को पालता रहा। फिर उन मासूम दिनों में मैंने कसम खाई थी कि मैं, चंद्रशेखर आज़ाद, अकेला – एकदम तनहा, अंग्रेज़ी साम्राज्य से टक्कर लूँगा। एक-एक अंग्रेज़ को, उनके एक-एक टटपूँजिये नौकर को, टोडी-बच्चों को गोली का निशाना बनाऊँगा। मुझे विश्वास था कि जब तक कोई देशद्रोही मेरा पता नहीं बताएगा, वे मुझे बंदी नहीं बना सकते। आज मैं देख रहा हूँ, चंद्रशेखर आज़ाद एक नहीं, हज़ारों-लाखों हैं, और मुझे इस बात पर गर्व है।

साँस लेकर सख़्त आवाज़ में

भारत में जितनी भी क्रांतिकारी संस्थाएँ हैं, उनके साथ संबंध बनाए जाएँ।

सब : इस बात की सख़्त ज़रूरत है।

आज़ाद : भगंतसिंह!

भगत : जी, आज़ादजी!

आज़ाद : यह काम तुम्हें और भगवतीचरण को मिलकर करना है।

भगत : जी, ठीक है!

आज़ाद : हर सूबे के क्रांतिकारियों से मिलकर, उन्हें अपनी नई नीतियों की जानकारी देनी होगी।

भगत : जी!

आज़ाद : इसके अतिरिक्त ...

भगत : जी ...

आज़ाद : मैं किसी भी गिरफ़्तारी के पक्ष में नहीं हूँ। हमारा एक-एक क्रांतिकारी अनमोल है। मैं उन्हें गँवाना नहीं चाहता। जो साथी अपनी मर्ज़ी से, लापरवाही से या फिर किसी और कारण से दुश्मन के हाथ लग जाएगा, वह हमारे लिए कमज़ोर और डरपोक साबित होगा। उसके लिए बेहतर यही होगा कि वह अपनी पिस्तौल से ख़ुद अपनी देह छलनी कर ले ताकि दुश्मन उसकी लाश की शिनाख़्त भी न कर सके।

सब : क्रांतिकारी अपनी जान दे देगा, लेकिन दुश्मन का हाथ अपने जिस्म पर नहीं लगने देगा।

आज़ाद : दूसरी बात! हमें ऐसे तेज़ दिमाग़ लोगों की ज़रूरत है जो कम-से-कम समय में ज़्यादा से ज़्यादा बम बना सकें।

भगत : मैं बंगाल के बहादुर सपूत जतिनदास को इस काम के लिए लेकर आऊँगा।

आज़ाद : हर सूबे में एक-एक फ़ैक्टरी होगी – लाहौर, आगरा, झाँसी, कलकत्ता, दिल्ली।

भगत : मैं समझता हूँ, इस काम के लिए काफ़ी पूँजी की ज़रूरत है।

आज़ाद : उसके लिए बैंक, पोस्ट ऑफिस और सरकारी ख़ज़ाने लूटे जाएँगे। हम अपने देश का पैसा अपने देश को आज़ाद कराने के लिए ख़र्च करेंगे। और फिर, जब बम लाहौर में फटेगा, तो किसी एक जगह नहीं, कई जगह एक साथ फटेगा। सिर्फ़ लाहौर में ही नहीं, हर सूबे, हर शहर में कई-कई जगह फटेगा। दुश्मन यह न समझे कि यह एक-दो या दस सिरफिरों का काम है बल्कि वह समझ जाए कि ज़बर्दस्त इनक़लाबी ताकत उभरकर आ चुकी है, जो अंग्रेज़ों की जड़ें काट रही है, और किसी भी समय हमला कर सकती है, क्रांति ला सकती है।

राजगुरु : मैं इस काम के लिए अपनी सेवाएँ अर्पित करने को एकदम तैयार हूँ। मैंने काशी में संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की है। जोगिया कपड़े पहनकर, 'अहिंसा परमोधर्मः' का उच्चारण करूँगा और बगल में बमों की गठरी दबाए निश्चित स्थान पर पहुँच जाऊँगा ... साथी को एक-दो या ज़रूरत के मुताबिक बम भेंट करके 'अहिंसा परमोधर्मः' का नारा लगाता हुआ फिर आपकी सेवा में हाज़िर हो जाऊँगा।

सभी : (*आज़ाद को छोड़कर*) राजगुरु की जय।

राजगुरु : अगर मुझे पता होता कि संस्कृत का अध्ययन इतना उपयोगी होता है, तो मैं सभी उपस्थित सज्जनों से इसके अध्ययन की प्रार्थना करता।

सभी : संस्कृत ज़िंदाबाद।

राजगुरु : मुझे संस्कृत के कई श्लोक भी याद हैं। अगर आप इजाज़त दें तो मैं एक श्लोक पढ़ूँ।

सभी : इजाज़त है।

वह एक श्लोक पढ़ता है।

सभी : राजगुरु की जय।

वह हाथ जोड़कर बैठ जाता है।

विजय : आज़ादजी, जब हमने सब संस्थाओं को अपने साथ मिलाने की ठान ली है, तो बेहतर होगा कि कि हम इसका नामकरण कर दें, क्योंकि हर सूबे में, हर संस्था का नाम अलग-अलग है, जैसे नौजवान भारत सभा, जिसे हमारे साथी भगतसिंह चला रहे हैं।

भगत : और इससे पहले कि हम अपनी नीति, अपने उद्देश्य को पूरी तरह समझें, आज़ादजी, क्या मुझे बोलने की इजाज़त है?

आज़ाद : कहो।

भगत : इस बात को दोहराने की ज़रूरत नहीं कि अंग्रेज़ हमारी ताक़त को स्वीकारने से इनकार करते हैं। ताकत तो क्या, हमारी मौजूदगी को भी वे नज़रअंदाज़ करते हैं। हमारे ऊपर उनकी कड़ी नज़र है। हमें राजनीतिक दल नहीं समझा जा रहा। इसलिए जब भी कोई इनक़लाबी गिरफ़्तार होता है, उसे मुज़रिम से भी परे मुज़रिम समझकर उस पर तरह-तरह के अत्याचार किए जाते हैं। लेकिन हिंदुस्तान के नौजवान, जिनका ख़ून गर्म है, जो पारे की तरह बेचैन हैं, वे सब हमारे साथ हैं।

फिर भी हम कांग्रेस की ताक़त को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। देश की बागडोर अंग्रेज़ों के अलावा अगर किसी के पास है तो वह कांग्रेस है। क्योंकि अवाम को पता है कि हिंदुस्तान की आज़ादी के लिए कांग्रेस जद्दोजहद कर रही है।

विजय : लेकिन उनके तरीक़े हमारे तरीक़ों से बहुत अलग हैं। कांग्रेस कान्फ्रेंसों, जलसों और बहसों में यकीन रखती है।

भगत : यह पक्ष भी ज़रूरी है।

विजय : भगतसिंहजी!

भगत : हाँ विजय, वह इसलिए कि अंग्रेज़ सरकार यह मानने के लिए तैयार हो गई है कि हिंदुस्तान का अवाम आज़ादी चाहता है।

विजय : फिर?

भगत : वह कांग्रेस से बात कर रही है।

विजय : कांग्रेस समझौता कर रही है।

भगत : इसीलिए हमारी भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। हमें इस रफ़्तार को तेज़

करना है। एक तरफ़ कांग्रेस उन्हें मजबूर करेगी कि वे अपने अधिकार धीरे-धीरे छोड़ते जाएँ, दूसरी तरफ़ हम अंग्रेज़ों का जीना हराम कर देंगे।

विजय : एक बात आप भूल रहे हैं!

भगत : कहो विजय!

विजय : कांग्रेस ने जनता की आज़ादी की भावना को राह दिखाई है और उसे सरकार के साथ अहिंसापूर्ण असहयोग आंदोलन के लिए ललकारा है। "एक साल में स्वराज" – गाँधीजी के इस नारे ने सारी जनता में जूझ पड़ने की भावना पैदा कर दी है। कचहरियों, स्कूलों और कालिजों का बायकाट बहुत कारगर साबित हुआ है। और फिर जनता ने, जैसाकि आपने अभी कहा, इस आंदोलन को तेज़ करने के लिए हल्ला बोला, उत्तरप्रदेश के चौरा-चौरी में उत्तेजित किसानों ने एक पुलिस थाने पर हल्ला बोल दिया। बारह पुलिसवाले मारे गए। जनसमूह के इस कठोर क़दम ने गाँधीजी को भी पाँव पीछे खींच लेने पर मजबूर कर दिया। चौरा-चौरी की घटना पर ऐसी प्रतिक्रिया होना ज़ाहिर करता है कि आंदोलन का क्रांतिकारी प्रसार देखकर कांग्रेसी नेता घबरा उठे थे। क्या देश इतना नाकारा था कि अमृतसर, गुजराँवाला और दूसरे कई स्थानों पर हज़ारों देशवासियों के क़त्ल का बदला लेने की शक्ति भी उसमें नहीं थी? क्या विदेशी शासकों के ख़िलाफ़ मजबूती से खड़े होने के लिए कांग्रेस कमज़ोर और समझौतावादी साबित नहीं हुई है?

क्षणिक विराम

भगत : विजय, कांग्रेस बुनियादी तौर पर एक ऐसी जमात है जिसकी नींव रजवाड़ाशाही पर रखी हुई है। इनका फ़लसफ़ा पिछली सदी का फ़लसफ़ा है। इनकी सोच स्वप्नवाद, आदर्शवाद की ओर ले जाती है। ये अहिंसा में इसलिए भी विश्वास रखते हैं क्योंकि इसके कर्ताधर्ता ऊँचे तबके से हैं, बुर्ज्वा हैं, या फिर मध्यमवर्गीय घरानों से ताल्लुक रखते हैं और गोलियों की बौछार से डरते हैं। ख़ून-ख़राबे से इनका दिल दहल जाता है। इनका संबंध मज़दूर-किसान वर्ग से नहीं है। अच्छा है, जनता की आँखें खुल जाएँ। वह स्वयं ही महसूस कर ले। मैं दावे से कह सकता हूँ कि एक दिन आएगा जब कांग्रेस का संबंध जनता से बिल्कुल टूट जाएगा। यह कुछ ही लोगों ही बनकर रह जाएगी।

विज़य : और हमें बदनाम किया जा रहा है!

भगवती : हिंसा की ज़िम्मेदारी हम पर थोपी जा रही है!

सुखदेव : वह इसलिए कि हमारी स्वीकृति बढ़ती जा रही है। दिन-ब-दिन लोग हमारे हौसले की दाद देने लगे हैं। हर रोज़ उनकी निगाहें हम पर टिकी रहती हैं कि

हमारा अगला क़दम क्या होगा?

राजगुरु : लोग जानते हैं कि अगर देश में क्रांति आ सकती है तो सिर्फ़ भारत के नौजवान ही ला सकते हैं।

भगत : इनक़लाब ऐसे नहीं आता।

विजय : हज़ारों जानें क़ुर्बान करनी पड़ती हैं।

सुखदेव : जान हथेली पर रखकर जान की बाज़ी लगानी पड़ती है।

भगत : इतिहास गवाह है, जब फ्रांस में इनक़लाब आया था, वहाँ की जनता को ख़ून की नदियाँ बहानी पड़ी थीं। अब रूस में इनक़लाब आया है तो ज़ारशाही को जड़ से उखाड़ फेंका है।

विजय : एक बात हमें सोचनी पड़ेगी। अंग्रेज़ बहुत चालाक और दूरदर्शी है। वह हिंदुस्तान की सियासत का फ़ायदा उठा रहा है। यहाँ के गोरे शासकों ने कांग्रेस को राजनीतिक पार्टी मानकर हम इनक़लाबियों को अलग-थलग कर दिया है। दिन-ब-दिन जेलों में सख़्तियाँ बढ़ रही हैं। जो इनक़लाबी एक बार जेल जाता है, फिर लौटकर नहीं आता।

भगत : लेकिन इससे हमारे हौसले पस्त नहीं होंगें। 'बैस्तली' का जेल फ्रांस में आज़ादी के परवानों के हौसले पस्त नहीं कर सकी थी। कोई काल-कोठरी, कोई काला-पानी, कोई यातना हमें हमारे उद्देश्य से नहीं भटका सकती। हम हिंदुस्तान को आज़ाद कराकर ही दम लेंगें। एक भगतसिंह जान देगा, एक आज़ाद जान देगा, कई सुखदेव, कई भगवतीचरण, कई विजय पैदा हो जाएँगे, जो आज़ादी की शमा जलाए रखेंगे।

सब : यक़ीनन।

भगत : आज हम घोषणा करते हैं, आज हम एक नारा तज़वीज़ करते हैं, जो वेद, उपनिषद, क़ुरान, गीता, गुरवाणी की तरह पवित्र होगा। जब-जब जनता पर ज़ुल्म होगा, ज़बर होगा, अत्याचार होगा, जब-जब जनता बेक़रार होगी, जब-जब देशवासी या ग़ैर-देशवासी हमारे अधिकार मानने से इनकार करेंगे तब-तब यह नारा लोहे की ज़ंजीरें काट देगा, जेलों, कालकोठरियों को जलाकर राख कर देगा, सत्ता बदल देगा। आज हम मंत्र की तरह उसका उच्चारण करेंगे, सारे मिलकर बोलेंगे - 'इनक़लाब ज़िंदाबाद।'

सब : इनक़लाब ज़िंदाबाद!

भगत : हमारा मक़सद ...

सब : आज़ादी!

भगत : हमारा नारा ...

सब : इनक़लाब!

भगत : इनक़लाब ...

सब : ज़िंदावाद!

भगत : साथियो, यह पहली लड़ाई है। हमें विदेशी शासकों को वाहर निकालना है। इसके वाद हम अपने देश में समाजवाद लाएँगे। मज़दूरों और किसानों को अपने साथ लेकर चलेंगे, क्योंकि इनके विना कोई इनक़लाब संपूर्ण नहीं हो सकता। इनके विना कोई तहज़ीव नहीं पनप सकती। इनके विना कोई दौर आगे नहीं बढ़ सकता। हम उन हाथों की क़द्र करेंगे, जो हाथ कपड़ा बुनते हैं, वे हाथ जो बीज वोते हैं, वे हाथ जो मेहनत करते है, वे हाथ जो देश की किस्मत वनाते हैं ... हम उन हाथों की क़द्र करेंगे। इसीलिए मेरी पेशकश है कि हम अपनी नई पार्टी का नाम 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' रखें।

सुखदेव : हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन ...

सब : ज़िंदाबाद!

क्षणिक विराम

भगवतीचरण खड़ा होता है –

भगवती : आज हमारे लिए वड़ा मुवारक़ दिन है। आज के वाद हमारी ज़िम्मेदारी वढ़ गई है। साफ़ ज़ाहिर है कि हम तोड़-फोड़ में यक़ीन नहीं रखते। हमारी राहें कहकशों की तरह रौशन हैं। हम पर सिर्फ़ अपना वतन आज़ाद कराने की ही जिम्मेदारी नहीं है, हमें एक नया निज़ाम भी क़ायम करना है – इसलिए उचित यही होगा कि हम अपना एजेंडा निर्धारित करें और सोचें कि अब कौन-सा क़दम उठाना है!

विजय : सबसे पहले तो यह फ़ैसला होना चाहिए कि साइमन कमीशन के स्वागत के लिए हमें क्या तैयारी करनी है!

भगवती : हाँ, क्योंकि भारत की सभी राजनीतिक पार्टियाँ ... और पार्टियाँ ही नहीं, सारे भारतवासी इसका वहिष्कार कर रहे हैं। देश-भर में जुलूस निकाले जाएँगे। हज़ारों-लाखों की संख्या में लोग इन जुलूसों में शामिल होंगे।

राजगुरु : तो क्या साइमन कमीशन इन जुलूसों की तसवीरें खींचेगा?

सब हँसते हैं

भगवती : राजगुरुजी, वे जानना चाहते हैं – क्या हम इस योग्य हैं कि आज़ाद हो सकें? आज़ाद होने के बाद क्या हम देश की बागडोर सँभाल सकेंगे?

राजगुरु : क्या वे हमारे नाम नहीं जानते?

भगवती : नए-नए आए हैं, अपने-आप पता लग जाएगा।

भगत : हमारे साथी इन जुलूसों को प्रोत्साहित करेंगे। इनके साथ मिलकर ख़िलाफ़त की आवाज़ बुलंद करेंगे।

आज़ाद : इसके अतिरिक्त सारी व्यवस्था की धज्जियाँ उड़ा दो। सबकुछ तहस-नहस कर दो। टेलीफ़ोन और बिजली के तार काट दो। डाक लूट लो। रेल की पटरियों पर बम रख दो। जहाँ-जहाँ साइमन कमीशन जाता है, वहाँ-वहाँ बम फेंको। याद रखो, हमारा मक़सद अब भी ख़ून-ख़राबा नहीं है। लेकिन उन्हें यह अहसास कराना है कि पूरी अंग्रेज़ सरकार – गोरे शासक और उनके पिट्ठू आज़ादी की इस लहर को नहीं दबा सकते। और अगर हम चाहें तो कोई भी अंग्रेज़ यहाँ से बचकर नहीं जा सकता। हम अपनी किस्मत ख़ुद बनाएँगे, किसी दूसरे देश को यह अधिकार हम नहीं देंगे। हम आज़ाद देश की तरह जिएँगे, इसके लिए चाहे हमें अपनी जान की बाज़ी लगानी पड़े।

सब : इनक़लाब ज़िंदाबाद! इनक़लाब ज़िंदाबाद! इनक़लाब जिंदाबाद!

हँसने की आवाज़ आती है

अँधेरा

रौशनी होती है

एक सड़क दिखाई देती है। पीछे कोई सरकारी इमारत है। पुलिस थाना, कचहरी आदि। साइमन एक टोडी के साथ दाख़िल होता है। टोडी साइमन की नकल करता है। वह हँसता है, तो वह भी हँसता है – बिल्कुल उसकी नकल करता है।

साइमन : आफ़ीसर, टुम अपना नाम क्या बटाया?

टोडी : सड़क पर अपना नाम पुलिस इंस्पैक्टर है, कोर्ट में प्रॉसीक्यूटर और जेल में वार्डन है।

साइमन : आई सी, आई सी ... आफ़ीसर हम टुम पर बहुट खुश।

टोडी : थैंक्यू वैरी मच सर!

साइमन : डेखो, हम बड़े काम से इढर आया।

टोडी : श्योर सर!

साइमन : अंग्रेज़ी हुकूमट हमें भेजा है। हम यहाँ के हालाट वहाँ बटाएगा! टुम हमारा हैल्प करेगा न?

टोडी : ऐट यूअर सर्विस सर!

साइमन : अच्छा ये बटाओ, जब हम जहाज से उटरा, लोग आवाज़ क्यों करटा।

टोडी : आवाज़ नहीं था सर, लोग रोता था।

साइमन : रोटा था, काहे को?

टोडी : कोई सगा मरता, तो लोग रोता।

साइमन : अच्छा!

टोडी : इधर लोग या तो रोता, या गाता। कोई मरता या पैदा होता, लोग बस रोता और गाता। खुशी में रोता और गाता, गर्मी में भी रोता और बहुत गाता है!

साइमन : आ हा, आई सी। वैरी इंटेरेस्टिंग। हमको लिखना माँगटा। (*नोट करता है।*) और कुछ ठस-ठस का आवाज़ आया!

टोडी : वो सब लोग दिवाली मनाता।

साइमन : डिवाली क्या?

टोडी : एक फेस्टीवेल सर, इधर हर तीसरे महीने में दीवाली मनाता और पटाख़े, क्रैकर्ज़ छोड़ता।

साइमन : आई सी, आई सी, वैरी इंटेरेस्टिंग, आई मस्ट गाइट इट। आर्फ़ीसर, हम टुमसे बहुत खुश।

टोडी : हम साहब का नौकर है, हमारा बाप भी नौकर था, दादा भी नौकर।

साइमन : वैरी गुड रिकार्ड, डाडा का बाट बोलो।

टोडी : आर्मी में कारपोरल था साहब, इंग्लैड भी गया, उधर एक धोविन यानी लांडरर से शादी बनाया।

साइमन : रोमैंटिक।

टोडी : हमारा बाप पैदा हुआ। बड़ा हुआ तो दादा की आया के साथ शादी बनाया।

साइमन : एडवैंचरस।

टोडी : हम पैदा हुआ, शादी वनाया, लेकिन सर ...

साइमन : क्या हुआ आर्फ़ीसर, हमको बोलो क्या हुआ?

टोडी : वह भाग गई सर, हमारे अंग्रेज बॉस के साथ।

साइमन : वैरी गुड रिकार्ड, टुमने डूसरा शादी नहीं वनाया?

टोडी : नहीं साहब, ऐसे ही गुज़ारा कर लेता हूँ। इधर बहुत गरीवी है, सर! और फिर हमारा डिप्टी बहुत सख़्त है, सर!

साइमन : आर्फ़ीसर, टुम बड़ा आर्फ़ीसर बनेगा? अच्छा, एक बाट वोलो। हम वड़े-वड़े शहरों में जाएँगे, मालूम करने के लिए कि लोग क्या बोलटा, क्या सोचटा है?

टोडी : साहब तुम जहाँ भी जाएगा, हज़ारों सिपाही सलाम करेगा। इधर का लोग बहुत शरारती है, शोर बहुत मचाता है, हम उन्हें तुम्हारे पास नहीं आने देगा। वे तुम्हारे पास आएँगे तो तुम रिपोर्ट नहीं लिख सकोगे।

साइमन : दैड इज़ करेक्ट, आई मस्ट हैव पीस ऑफ माइंड।

टोडी : ज़रूरत पड़ने पर हम उन पर लाठी चलाएगा, गोली मारेगा।

साइमन : लेकिन हमको ये मालूम नहीं होना माँगटा। क्योंकि ऐसा बाट हम अपनी रिपोर्ट में नही लिख सकटा।

टोडी : बिल्कुल नहीं सर!

साइमन : अब ये बटाओ आफ़ीसर ...

टोडी : सर ?

साइमन : हम इन लोगों को आज़ाडी डें या नहीं। टुम फैसला करो। टुम यहाँ का रहनेवाला है, इंडियन है, थोड़ा इंडियन, थोड़ा अंग्रेज़ – मिक्स ब्रीड है। टुम ही बोलो? आज़ाडी माँगटा? यैस आर नो।

टोडी : साहब, इन्हें आज़ाद कर दोगे तो ये एक-दूसरे को ही काट खाएँगे। इधर हिंदू मुसलमान को काटता, मुसलमान सिक्ख को, सिक्ख मुसलमान को ... ज़मीन के छोटे-छोटे टुकड़ों के लिए ख़ून-ख़राबा करता है। धर्म के लिए, भैंस के लिए, औरत के लिए ख़ून करता है। और साहब, बहुत सुस्त, लेज़ी लोग है। रात-भर सोता है। दिन-भर सोता है। इनको आज़ादी देगा तो देश के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे। एक प्रोविंस दूसरे से अलग हो जाएगा। इनको आज़ादी बिल्कुल नहीं देने का।

साइमन : आई एग्री ... आई एग्री ... हम टुमारा बाट मानटा आफ़ीसर, बिल्कुल ऐसा होगा। हम रिपोर्ट आज लिखटा है, टूर कल से शुरू करेगा।

टोडी : गुड आईडिया सर!

साइमन : ओके आफ़ीसर।

टोडी सलाम करता है। साइमन जाता है। उसके पीछे टोडी जाता है।

अँधेरा

दूसरा अंक

पद का उच्चारण हो रहा है, जैसे कोई धार्मिक त्योहार मनाया जा रहा हो। भगतसिंह दिखाई देता है, वह भी ऐसे जैसे आसमान से नूर बह रहा हो। आवाज़ के साथ रौशनी बढ़ती है, सिर्फ़ भगतसिंह पर, जैसे वह किसी रूहानी ख़्वाब में खोया हो। अब उसने टोपी पहन रखी है। बदन पर वर्दी है। सांडर्स को मारने के बाद उसे अपना पहनावा बदलना पड़ा है। वह घुटने टेकता है, जैसे दुआ माँग रहा हो। आवाज़ धीरे-धीरे हल्की होती है।

भगत : हे धरतीमाता, अगर तेरी आन, बान और शान क़ायम है, तो हमारा धर्म क़ायम है, हमारा मान क़ायम है। अगर तेरे ऊपर कोई विपत्ति आती है तो हमारा अस्तित्व, हमारे विचार और हमारा धर्म कभी नहीं बच सकेंगे। हम तेरे चरणों में अपना तन-मन-धन अर्पित करते हैं।

भगतसिंह धीरे-धीरे मुड़ता है ...

अँधेरा

रौशनी होती है।

फ़िरोज़शाह कोटला में चंद्रशेखर आज़ाद खड़े हैं, जैसे अपने ही ख़यालों में गुम हों। भगतसिंह आगे बढ़ता है। आज़ाद मुड़कर देखते हैं। इस बार इन दोनों के रवैये में काफ़ी तब्दीली दिखाई देती है। पहलेवाला उतावलापन और जोश घटता जा रहा है; बल्कि संजीदगी और ठहराव आ गया है, ज़िम्मेदारी बढ़ गई है। जैसे जिस्म में कोई ख़ास तब्दीली आ रही हो।

भगत : आज़ादजी, आपकी इजाज़त चाहता हूँ!

आज़ाद : कहो!

भगत : लालाजी की मौत का बदला हमने ले लिया है सांडर्स की मौत से! दिन-दहाड़े उसका क़त्ल और चन्ननसिंह की मौत। दूसरे हमारा कोई भी साथी गिरफ़्तार नहीं हुआ। यह हुकूमत के मुँह पर एक ज़ोरदार तमाचा है।

आज़ाद : हाँ ...

भगत : अब अगली कार्यवाही?

आज़ाद : अगली का क्या मतलब है? क्या कार्यवाही बदलनी है?

भगत : मैं समझता हूँ।

आज़ाद : अच्छा?

भगत : क्या सोच रहे हैं आप?

आज़ाद : मैं सोच रहा हूँ कि स्कॉट बचकर निकल गया। मैं दिन-रात बेचैन रहता हूँ, नींद नहीं आती। ऐसा महसूस होता है जैसे मेरे बदन में काँटे चुभ रहे हों।

भगत : हूँ! अब स्कॉट बाहर नहीं निकलेगा। उसे पता लग गया है कि उसकी जान को ख़तरा है। वह जानता है कि यह हमला सांडर्स पर नहीं, उस पर किया गया था। लेकिन मैं पूछता हूँ कि क्या हमारा उद्देश्य सिर्फ़ स्कॉट का क़त्ल करना है?

आज़ाद : मैं समझा नहीं!

भगत : मैं बहुत दिनों से सोच रहा हूँ कि हम जो यह फ़रार जीवन व्यतीत कर रहे हैं, इसमें हम मुश्किल से पाँच-दस स्कॉटों या सांडर्सों के क़त्ल कर सकेंगे या बीस-पचास बम फेंक सकेंगे!

आज़ाद : भगतसिंह, यह कोई छोटी बात नहीं है। जब हम जान देते हैं, मर जाते हैं, तब फिर दूसरी पीढ़ी तैयार होती है। इस क्रांति की तारीख़ में मैं और तुम ही नहीं हैं।

भगत : मैं मानता हूँ और मैं इस बात से इनकार नहीं करता।

आज़ाद : सांडर्स का एक क़त्ल पूरे देश की हवा बदल सकता है ... एक नई जाग्रति पैदा कर सकता है, एक नई उम्मीद ला सकता है। आज जनता सीना तानकर चलती है। लोगों के चेहरों पर एक विश्वास है। चुप्पी अब आवाज़ में बदल रही है। एक अनोखी मुस्कुराहट ने जन्म लिया है। उनका भरोसा और आत्मविश्वास बढ़ रहा है।

भगत : जो आपने कहा, वही बात मेरे मन में थी आज़ादजी। आप ऐसे बोल रहे थे जैसे मैं आपको कोई कहानी सुना रहा होऊँ।

आज़ाद : तुझे इससे तसल्ली नहीं?

भगत : नहीं, बिल्कुल नहीं। जैसे आपको चैन नहीं, और न आपको नींद आती है ... जैसे आपके बदन में काँटे चुभते हैं, उसी तरह मैं भी परेशान हूँ। हमारी ज़िंदगी के पता नहीं कितने दिन बांकी हैं। अगर यह काम अधूरा रह गया तो हमें मौत भी नहीं आ सकेगी!

आज़ाद : मैं सुनने के लिए तैयार हूँ।

भगत : इससे पहले कि हम हालात पर एक नज़र डालें ...

आज़ाद : हाँ-हाँ! कहो ...

भगत : जिसका जवाब आपने अभी दिया है, मैं वही सवाल दुबारा कर रहा हूँ क्योंकि मुझे आपके जवाब से तसल्ली नहीं हुई।

आज़ाद : अच्छा?

भगत : इससे पहले कितने ही देशभक्त इस पवित्र जन्मभूमि के लिए शहीद हुए हैं। शहीदे-आज़म करतारसिंह सराभा, विष्णुगणेश पिंगले, भाई बलवंत सिंह और उसके साथी ... बेशुमार ... अनगिनत – इस देश में, रंगून में, सियाम में ... सबने अपनी जानों की आहुति दी।

आज़ाद : इस धरतीमाँ को उन पर गर्व है। वे सब महान सपूत थे और उनका बलिदान व्यर्थ नहीं गया। आनेवाली पीढ़ियाँ उनका नाम आदर-सत्कार से लेंगी और उनके नाम पर श्रद्धा-सुमन अर्पित करेंगी।

भगत : आज़ादजी, शहीद जब भी अपने उद्देश्य के लिए जान देता है, उसका जन्म सफल हो जाता है। यही उसकी अंतिम इच्छा होती है।

आज़ाद : वह तो ठीक है, लेकिन यह बताओ तुम कहना क्या चाहते हो?

भगत : मेरी बात आप उसी प्रेम और हमदर्दी से सुनोगे जैसे हमेशा उदारता दिखाते रहे हैं।

आज़ाद : वक़्त ज़ाया न करो भगतसिंह! कहो क्या कहना चाहते हो!

भगत : अभी आपने कहा था, भारत में जाग्रति पैदा हो गई है। जनता एक नया जोश, एक नया वलवला महसूस कर रही है! अब उसे कोई दबा नहीं सक़ता। कोई

ताक़त, कोई हुकूमत उसकी राह में रोड़ा नहीं अटका सकती।

आज़ाद : पूरी तरह सच है यह।

भगत : अगर इन दिनों में हमारा कोई साथी अपने उद्देश्य के लिए जान देकर शहीद होता है, तो उसका बलिदान इस जोश और क्रांति की लहर को और आगे बढ़ा सकता है।

आज़ाद : एकदम सही कहा।

भगत : क्या कोई ऐसा तरीक़ा नहीं है, जिससे जनता की इस जाग्रति और जोश को बुरी तरह झिंझोड़कर एक तूफ़ान खड़ा कर दिया जाए? ऐसा तूफ़ान, जिसमें संयम हो, संगठन हो – नपा-तुला। हम रहें या न रहें, जनता में इतनी जुर्रत आ जाए कि वह आज़ादी लेकर ही दम ले!

आज़ाद : तुम्हारे ख़याल से हमें क्या करना होगा?

भगत : दिल्ली असेंबली में पब्लिक सेफ़्टी एक्ट और ट्रेड डिसप्यूट्स एक्ट पास किया जा रहा है।

आज़ाद : फिर?

भगत : मतलब यह कि जनता पर जुल्म और अत्याचार बढ़ जाएगा। नए-नए क़ानून बनाकर उसकी बची-खुची आज़ादी पर भी पाबंदियाँ लगा दी जाएँगी।

आज़ाद : ठीक है।

भगत : दूसरी तरफ़ मज़दूरों के अधिकार छीने जा रहे हैं।

आज़ाद : यह भी ठीक है।

भगत : इसका अर्थ है कि हूकूमत जनता के जज़्बात और आवाज़ अनसुनी करके हमारी छाती पर मूँग दल रही है।

आज़ाद : हुकूमत बहरी है, वह जनता की आवाज़ नहीं सुनती।

भगत : इसलिए बहरों के कानों तक अपनी आवाज़ पहुँचाने का कोई दूसरा तरीक़ा अपनाना होगा।

आज़ाद : कौन-सा तरीक़ा?

भगत : जब असेंबली की कार्यवाही पूरे ज़ोरों पर हो, तब असेंबली में बम फेंक दिया जाए ताकि उन्हें पता लगे कि वे कोई भी ऐसा क़दम नहीं उठा सकते, जो हमें मंज़ूर नहीं।

आज़ाद : मैं आपकी बात से सहमत हूँ। हर हालत में, हर क़ीमत पर बम फेंके जाएँगे।

भगत : लेकिन हम बम इस तरह फेंकें कि उससे जान-माल का नुकसान न हो।

आज़ाद : हो भी जाए तो हमें परवाह नहीं।

भगत : नहीं आज़ादजी, सोच-समझकर, नाप-तोलकर, देख-सुनकर बम ऐसी जगह फेंका जाए, जिससे जान का नुकसान न हो।

आज़ाद : मतलब?

भगत : मतलब यह कि हम किसी को मारना चाहें तो मार भी सकते हैं। लेकिन हमारा उद्देश्य यह नहीं है ... हमारा उद्देश्य तो यह है कि जनता में आज़ादी की लहर को फैलाया जाए और बहरे कानों को इनक़लाब ज़िंदाबाद के नारे सुनाए जाएँ।

आज़ाद : ठीक है भगतसिंह!

भगत : उसके साथ ही ...

आज़ाद : हाँ-हाँ, कहो!

भगत : हमारे जो साथी बम फेंकेंगे, वे अपने-आपको पुलिस के हवाले कर देंगे।

आज़ाद : भगतसिंह, तुम जानते हो कि मैं गिरफ़्तारी के पक्ष में नही हूँ। हम अपने किसी भी साथी को पुलिस के रहम पर नहीं छोड़ सकते। जेलों में जो कुछ होता, है, वह किसी से छुपा हुआ नहीं है। क़ैद और बेइज़्ज़ती की मौत मरने से अच्छा है कि आदमी सरेआम मुक़ाबला करता हुआ मारा जाए।

भगत : मौत तो हमारी क़िस्मत है आज़ादजी। हमारे वश में तो यही है कि हम कैसी मौत मरना पसंद करते हैं। हमें तो सिर्फ़ यह देखना है कि कौन-सी मौत देश के लिए अधिक फ़ायदेमंद होगी।

आज़ाद : ठीक है भगतसिंह। अपने साथियों में मैं तुम पर ही अगाध विश्वास करता हूँ।

भगत : मैं कितना ख़ुशक़िस्मत हूँ आज़ादजी कि आपका विश्वासपात्र हूँ।

आज़ाद : इसके बाद क्या करना होगा?

भगत : मेरा उद्देश्य सिर्फ़ इतना है कि हमारी इस हरकत को एक राजनीतिक मामला बनाया जाए। असेंबली में बम फेंकने से जनता हमें अधिक जानने लगेगी। देश के नौजवान अब हमारे हक़ में हैं। सांडर्स के क़त्ल के बाद कांग्रेस का प्रभाव बहुत कम हो गया है।

आज़ाद : कांग्रेस जागीरदारों और पूँजीपतियों के गठजोड़ से बनी है – उनके अपने हित भी हैं!

भगत : बस यही एक मौक़ा है जब हम अपने इरादे, अपने उद्देश्य, जनता के सामने रखें और अपने बारे में उन्हें बताएँ! अपनी पार्टी को राज़नीतिक पार्टी का दर्ज़ा दिलवाएँ। अदालत में जब हमारे ऊपर मुक़दमा चले तो हम अपना पक्ष उनके सामने रखें!

आज़ाद : अच्छा ...

भगत : लोग देखेंगे कि जो भारतवासी अपनी जान पर खेलकर असेंबली में बम फेंकता है, सिर्फ़ इस उद्देश्य से कि हुकूमत को चेतावनी दे सके ... जो निर्दोष है, जब उसे मुज़रिम क़रार दिया जा रहा है, तो उनके सीनों में बदले की आग भड़केगी। और फिर अगर उसे सज़ा दी जाती है या उस पर अत्याचार किए जाते है, तो उनके मन में लावा भड़केगा! ख़ुशक़िस्मती से अगर उसे फाँसी दी जाती है, तो इनक़लाब आया ही समझो।

आज़ादजी खड़े हो जाते हैं, भगतसिंह के कंधे पर हाथ रखते हैं। वे पूरी तरह प्रभावित हैं। फिर धीरे-से बोलते हैं –

आज़ाद : उस आदमी का नाम सोचो, जो असेंबली में बम फेंकेगा।

क्षणिक विराम

भगत : बटुकेश्वर दत्त और भगतसिंह।

आज़ाद : क्या?

भगत : हाँ आज़ादजी!

आज़ाद : भगतसिंह, तुम जानते हो कि तुम क्या कह रहे हो! मेरा एक बाज़ू काट देना चाहते हो।

भगत : आपके तो हज़ार बाज़ू हैं आज़ादजी! आपकी एक आवाज़ से पूरे हिंदुस्तान के कान खड़े हो जाते हैं।

आज़ाद : तुम अपनी क़द्र नहीं जानते हो, भगतसिंह! तुम नहीं जानते, तुम्हारे नाम में क्या जादू है। माँएँ अपने बच्चों का नाम भगतसिंह रखना चाहती हैं। सुबह-सुबह हमारे बुज़ुर्ग तुम्हारा ही नाम जपते हैं। हर नौजवान के दिल में यह लालसा है कि वह भगतसिंह बने। लोग तुम्हारे नाम की ज्योति जलाने मंदिरों में जाते हैं और मस्जिदों में तुम्हारी लंबी उम्र की कामना करते हैं। हिंदुस्तान की बहनें तुम्हारे लिए अरदास करती हैं ... तुम्हारे जीवन की रक्षा के लिए सारा दिन आसमान की तरफ़ नज़रें गड़ाए दुआ माँगती रहती हैं। अपने भाई के लिए मंगल-गीत गाती हैं। वे तुम्हें दूल्हे के रूप में देखना चाहती हैं।

क्षणिक विराम

भगत : इसीलिए मेरा गिरफ़्तार होना ज़रूरी है। मेरा उद्देश्य यही है कि इनक़लाब का दौर तेज़ रफ़्तार से चले। फिर मुझमें और मेरे साथियों में कोई फ़र्क़ नहीं है। मैं अपनी इस मुट्ठी-भर जान का क्या करूँगा! कब तक बचाकर रखता रहूँगा इसे! कई दिनों से मुझे नींद आई। आँखों में जलन-सी महसूस होती है। नस-नस में जैसे काँटे चुभते हैं। अगर जनता भारत के एक अदना सिपाही को इतने गर्व से देखती है, तो क्या सिपाही उसके जज़्बात की क़द्र नहीं करेगा? आज़ादजी, वतन के सिपाही की किस्मत मौत है – वह मौत कितनी हसीन है! वह मौत कितनी दिलफ़रेब है, आज़ादजी! वह मौत, मौत ही नहीं जो वतन के

काम न आ सके। आज़ादजी, आप सिर्फ़ हुक्म करो, मैं आपके हुक्म का ग़ुलाम हूँ। मैं क्हाँ जेल में, अदालत में अपने तर्कों से उनके होश उड़ा दूँगा, और यहाँ आप उनका जीना हराम कर दोगे। ज़रा सोचो, क्या हमारे पास इतना वक़्त है कि हम यह सुनहरी मौक़ा गँवा दें; नहीं, हमारे पास वक़्त है ही कहाँ कि उसे व्यर्थ गँवाया जाए!

आज़ादजी ज़ज़्बाती होकर सहमत हो जाते हैं और दबी आवाज़ में सिर्फ़ इतना कहते हैं -

आज़ाद : इनक़लाब ज़िंदाबाद।

अँधेरा

अँधेरा होते ही धमाका होता है, फिर दो आवाज़ें - एक भगतसिंह की और दूसरी बटुकेश्वर दत्त की - गूँजती और बढ़ती जाती हैं -

"अपने काम की सज़ा भुगतने के लिए और साम्राज्यवादी शासकों को यह बताने के लिए कि तुम जनता को कुचलकर उनके विचारों को क़त्ल नहीं कर सकते, हम अपने-आपको पुलिस के हवाले करते हैं। दो इकाइयों का ख़ात्मा करके पूरे देश को नहीं कुचला जा सकता। यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि फ़्रांस में भी जेल के वारंट और क़त्लेआम से क्रांतिकारी आंदोलन को कुचला नहीं जा सका था। साईबेरिया की काल-कोठरियाँ और फाँसी के तख़्ते भी क्रांति की ज्वाला को बुझा नहीं सके थे। क्या वैसे ही आर्डीनेंस और सेफ़्टी बिल भारत की आज़ादी की शमा बुझा सकेंगे? झूठे मुक़दमों से, पुलिस-मुक़ाबलों से और आज़ादी के लिए लड़ रहे योद्धाओं को जेलों में डाल देने से इस महान आदर्श की हत्या नहीं की जा सकेगी, और न ही क्रांति की ओर बढ़ते क़दम कभी रुक सकेंगे। इनक़लाब ज़िंदाबाद, ब्रिटिश साम्राज्यवाद मुर्दाबाद, दुनिया के मज़दूरो एक हो जाओ।

अँधेरा

जेल की कोठरी। सर्दी का मौसम। टोडी दरोग़ा की वर्दी में है। एक हवलदार बर्फ़ की सिलें जोड़कर रख रहा है। हवलदार ने कोट पहन रखा है, लेकिन फ़िर भी वह सर्दी से काँप रहा है। टोडी ओवरकोट पहने हुए है।

टोडी : तुझे बहुत ठंड लग रही है?

हवलदार: कमज़ोर आदमी हूँ दरोग़ाजी। अब इन हड्डियों में बचा भी क्या है?

टोडी : बस अब तो काम ख़त्म ही समझो।

हवलदार: यह ख़त्म होगा तो कोई दूसरा निकल आएगा। आज मैं अपनी बीवी से कह रहा था कि हे नेकबख़्त औरत, आज अल्लाह के फ़ज़ल से तू अपने को विधवा हुई समझ। आज या तो बर्फ़ की पूरी सिल्ली ही वापिस आएगी–एकदम तख़्ते की तरह अकड़ी हुई और या फिर तेरा शरीक़े-हयात! ईश्वर उस बेचारी को जन्नत बख़्शे! हालाँकि जन्नत हमारे ख़ानदान में किसी को भी नहीं मिल सकती ... हमारे कर्म तो देखो! इनसे जन्नत तो दूर की बात है, दोज़ख़ भी मिलना मुश्किल है। हमें वापिस फिर कहीं ज़मीन पर फेंक दिया जाएगा, जहाँ अंग्रेज़ों का राज होगा। हाँ दरोग़ाजी, मैंने उससे यही कहा था कि या तो तेरे पास बर्फ़ की सिल आएगी या फिर निमोनिया से मरा हुआ तेरा पति।

टोडी : बहुत रोई-धोई होगी!

हवलदार: दरोग़ाजी, औरत के तिरिया-चरित्तर पर न जाओ। आँसू बहाती जाएगी और मन-ही-मन सोचती रहेगी – अच्छा ही हुआ, छुटकारा मिला। अब मैं अपने आशिक़ से मन बहला लिया करूँगी। आपकी पत्नी भी तो ... माफ़ करना, ठंड बहुत है ... ज़रा गर्म-गर्म बातें करके गर्म होने की कोशिश कर रहा हूँ।

टोडी : कोई बात नहीं, तू मेरा पुराना वफ़ादार आदमी है।

हवलदार: दरोग़ाजी, मैं आदमी ही रहा और आप दरोग़ा बन गए। आपको याद है हमने एक साथ नौकरी शुरू की थी – फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था कि आप मुझसे दो क्लास ज़्यादा पढ़े हुए थे।

टोडी : इतना ही नहीं, एक वजह यह भी है कि मेरी बीवी अंग्रेज़ के साथ भाग गई थी ...

हवलदार: आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? मैं अपनी बीवी को भी यही पाठ पढ़ाता!

टोडी : तूने कभी पूछा ही नहीं।

हवलदार: हाँ, मुझे हर बात का पता तभी लगता है जब वक़्त निकल जाता है!

अब देखो, बर्फ़ की सिलों से कुश्ती मैं कर रहा हूँ, लेकिन मैडल किसे मिलेगा? आपको!

टोडी : मेरे साथ ऐश भी तो तू ही करता है। इतनी सुविधाएँ किसी दूसरे को मिलती हैं क्या? सब यही कहते हैं कि तू मेरे बहुत क़रीब है।

हवलदार: लोगों का क्या है साहब। जलते हैं साले! न खुद खा सकते है, न किसी को खाने देते हैं।

टोडी : अच्छा यह बता – उसने बताया कुछ? कोई नाम वग़ैरह?

हवलदार: नहीं सरकार!

टोडी : बिल्कुल नहीं?

हवलदार: मुँह ही नहीं खोलता!

टोडी : टॉर्चर नहीं किया?

हवलदार: टॉर्चर? चार-चार रात सोने नहीं दिया, हज़ार-हज़ार वॉट के बल्ब आँखों के आगे जलाए और कहा कि आँखें बंद नहीं करनी। वांक़ई उस ख़ुदा के बंदे ने आँखें बंद नहीं कीं। फिर मैंने कहा-अच्छा बंद कर ले, लेकिन सोना नहीं। मैंने सोचा था कि वह थोड़ी भी झपकी लेगा, तो डंडा मारकर जगा दूँगा। दो घंटे बाद मैंने आवाज़ दी – 'सो गया क्या'? उसने फौरन आँखें खोल दीं। सच, मैंने ज़िंदगी में यह पहला आदमी देखा है, जिस पर कोई असर नहीं है - न टॉर्चर का, न किसी और बात का। ऐसे-ऐसे छहफुटे आदमी तो देखे हैं, जो झटके हुए बकरे की तरह तड़पते हैं। लेकिन एक यह है कि न बोलता है, न हिलता-डुलता है, न बात करता है। खाना तो क्या, पानी भी नहीं माँगता। बस उसकी खुली आँखें अंगारे की तरह दहकती हैं, न देखती हैं, न बंद होती हैं, जैसे शीशे की आँखें हों। अगर नज़र भरकर देख लें तो रूह काँप जाती है।

टोडी : अगर यह आदमी किसी एक का भी नाम बक दे तो मैं इंसपैक्टर जनरल बन जाऊँ।

हवलदार: देखते हैं, शायद इस कड़कड़ाती ठंड में बर्फ़ की सिलों पर इस आदमी का दिल पिघल जाए और हम ग़रीबों पर उसे रहम आ जाए।

टोडी : जा ले आ उसे।

भगतसिंह दाखिल होता है। हवलदार उसके पीछे-पीछे है। भगतसिंह की आँखों के आसपास काले घेरे दिखाई देते हैं। शरीर कमज़ोर। बाल रूखे। हाथों-पैरों में बेड़ियाँ, लेकिन

आँखों में जादुई तेज और विश्वास।

टोडी : माफ़ करना भगतसिंह! थोड़ी-सी तकलीफ़ देनी है तुझे!

भगत : *(मुस्कुराकर)* थोड़ी-सी क्यों दरोग़ाजी! कर लो जो जी चाहे!

टोडी : क्या करूँ, नौकरी है!

भगत : कहो!

टोडी : यह बर्फ़ का बिस्तर है!

भगत : साफ़ और सफ़ेद!

टोडी : तकलीफ़ करोगे?

भगत : हुक्म करो – सो जाऊँ!

भगतसिंह लेट जाता है। टोडी हज़ार वाट का बल्ब उसकी आँखों के सामने जलाता है ...

टोडी : देख भगतसिंह। मेरी कोशिश यही होगी कि मैं तुझे ज़्यादा से ज़्यादा टॉर्चर करूँ। लेकिन यह भी जानता हूँ कि तू मुझे कुछ नहीं बताएगा।

भगत : आपने बिल्कुल ठीक समझा है।

टोडी : मेरी जान सिर्फ़ इस तरह बच सकती है कि मैं तुझे इतनी ज्यादा तकलीफ़ दूँ जो तेरी बर्दाशत से बाहर हो। तभी मैं अपने अफ़सरों के सामने अपनी सफ़ाई पेश कर सकूँगा।

भगत : आप अपनी ड्यूटी करो।

टोडी : अकेला मैं ही इस मुसीबत में नही हूँ, बाक़ी दो दरोगा भी इसी मुसीबत में हैं, क्योंकि तुम्हारे दो साथी भी तुम्हारे जैसे ही हैं।

भगत : मैं बहुत खुश हूँ।

टोडी : मेरी समझ में नहीं आता कि तुझे खुशी कैसे महसूस हो सकती है। अच्छा, अब बैठ जा! तू खड़ा हो सकता है? (*भगतसिंह खड़ा हो जाता है*) अब एक टाँग पर खड़ा हो जा। (*भगतसिंह एक टाँग पर खड़ा हो जाता है*) दरअसल मैं चाहता हूँ कि तू टॉर्चर सहे बिना ही मर जाए।

भगत : मुझे अफसोस है कि आपकी यह इच्छा कभी पूरी नहीं होगी!

टोडी : यह तो ज़्यादती है भगतसिंह!

भगत : माफ़ करना, जो बात मेरे बस में नहीं है, वह मैं कैसे कर सकता हूँ!

टोडी : पक्की बात है तेरे बस में नहीं है?

भगत : बिल्कुल!

टोडी : सुना है जीना-मरना ईश्वर के हाथ में होता है?

भगत : तुम जैसे लोगों के लिए यह बात मानने लायक हो सकती है।

टोडी : और तुम लोगों के लिए?

भगत : जब तक हमारा मक़सद पूरा नहीं होता, हम मर नहीं सकते।

टोडी : अगर मैं तुझे गोली मार दूँ? कुत्तों से नुचवा दूँ या रफ़ा-दफ़ा करवा दूँ?

भगत : मैं जानता हूँ, तुम्हारे पास और कोई चारा भी नहीं है।

टोडी : फिर तू कैसे जीवित रहेगा?

भगत : तुम जिस जीने-मरने की बात कर रहे हो, उसकी बात मैं नहीं कर रहा।

टोडी : मैं समझा नहीं ...

भगत : तुम समझ भी नहीं सकते!

टोडी : कुछ बता तो सही!

भगत : सिर्फ़ मेरा यह शरीर मिट्टी बन जाएगा। लेकिन मेरे ख़याल हवा के साथ उड़कर चारों तरफ़ फैल जाएँगे। जीने का अरमान जागेगा और मेरे ख़ून के हर क़तरे से हज़ारों भगतसिंह जन्म लेंगे।

टोडी : सच कह रहा है तू?

भगत : (*हँसता है*) ...

टोडी : फिर यह ग़लती मैं नहीं करूँगा। बैठ जा (*भगतसिंह बैठ जाता है*) अब कमीज़ उतार दे।

भगत : यह तकलीफ़ आप ही करो।

भगतसिंह बँधे हुए हाथ दिखाता है ...

टोडी : हवलदार, इसकी कमीज़ फाड़ दे।

हवलदार कमीज़ फाड़ता है ...

अब लेट जा!

वह लेट जाता है ...

कोई असर हुआ भगतसिंह?

भगत : मैं महसूस कर रहा हूँ, मेरा जो हिस्सा सुन्न हो चुका है, वह मेरा नहीं है। इसलिए मुझे उसके होने या न होने का अहसास नहीं! जिस्म के जो बाक़ी हिस्से हैं, वे जीवित हैं। वे मेरे हैं, इसलिए मैं उनकी बदौलत जी सकता हूँ। कभी मैं यह भी महसूस करता हूँ कि जो हिस्सा बेजान हो गया है, वह भी मेरा

है। क्योंकि वह वतन के काम आ रहा है, इसलिए वह मुझे सबसे प्यारा है! शायद इसीलिए मुझे दर्द का अहसास नहीं होता। फिर मेरा सारा जिस्म सुन्न हो जाता है, लेकिन मैं ज़िंदा रहता हूँ ... पहले से सौ गुना ज़्यादा ज़िंदा। क्योंकि ज़िंदगी का अहसास मेरे दिमाग़ में एक शोले की तरह रौशन है, जिसे कोई हवा नहीं बुझा सकती, इसलिए जो भी ज़िंदगी मेरे देश में नाचती, हँसती-खेलती और ख़ूबसूरत दिखाई देती है, वह मेरी बदौलत क़ायम है – यही अहसास मुझे जीवित रखता है।

टोडी उठता है, पसीना पोंछता है।

टोडी : हवलदार, ले जा इसे।

भगतसिंह उठता है और बाहर जाता है। हवलदार पीछे-पीछे जाता है।

अँधेरा

रौशनी होती है ...

अदालत में एक क्लर्क फ़ाइल देख रहा है – टोडी सरकारी वकील के लिबास में दाख़िल होता है।

क्लर्क : गुड मार्निंग, सर!
टोडी : गुड मार्निंग!
क्लर्क : आज अंतिम सुनवाई है?
टोडी : जी! मैं अपनी तरफ़ से केस ख़त्म कर दूँगा।
क्लर्क : क्या ख़याल है तुम्हारा? कितनी सज़ा होगी?
टोडी : सज़ा तो उसी दिन तय कर दी गई थी जिस दिन ये गिरफ़्तार हुए थे।
क्लर्क : मतलब?
टोडी : फाँसी का फंदा! (*हँसता है*)
क्लर्क : फिर यह मुक़दमा, भाग-दौड़ और बड़ी-बड़ी तक़रीरें?
टोडी : यह मुक़दमा नहीं है भाई मेरे, यह एक रस्म है – क़ुर्बानी की रस्म। तूने देखा नहीं, जिस जानवर की बलि दी जाती है, उसे हार पहनाए जाते हैं, जुलूस निकाले जाते हैं, ढोल-ताशे बजाए जाते हैं। (*हँसता है*)

क्लर्क : जी!

ट्रिब्यूनल दाख़िल होता है, जिसमें एक अंग्रेज़ और दो हिंदुस्तानी हैं। क्लर्क और वकील खड़े होते हैं और ट्रिब्यूनल के बैठते ही बैठ जाते है। सभी अपने-अपने काग़ज़ देखते हैं।

जज : मिस्टर प्रॉसीक्यूटर!
टोडी : मीलॉर्ड!
जज : विल यू समअप दॅ केस?
टोडी : आई एम रेडी मीलॉर्ड।

भगतसिंह को संबोधित करता है ...

टोडी : भगतसिंह?
तीनों : कहिए ..
टोडी : मैं सिर्फ़ भगतसिंह से बात कर रहा हूँ!
राजगुरु : आज मेरा नाम भगतसिंह है, कल राजगुरु होगा और परसों सुखदेव!
सुखदेव : मेरा नाम आज राजगुरु है, कल सुखदेव होगा और परसों भगतसिंह।
भगत : मेरा नाम राजगुरु है, सुखदेव भी और भगतसिंह भी।

टोडी जज की ओर देखता है ...

जज : देखो, यह अदालत है!
सुखदेव : यह अदालत नहीं, तुम्हारी दुकान है।
राजगुरु : इस पर इंसाफ़ का बोर्ड लगा है, जो यहाँ कौड़ियों के भाव बिकता है।
भगत : हमें ऐसी अदालत पर बिल्कुल भरोसा नहीं।
जज : सोच-समझकर बात करो।
तीनों : हम वहीं बोलेंगे, जो हम बोलना चाहते हैं।
जज : इसका परिणाम बुरा होगा!
तीनों : परिणाम! (*तीनों हँसते हैं*)
जज : (*टोडी से*) यू बैटर प्रोसीड।
टोडी : तुमने असेंबली में बम फेंका था?
भगत : हाँ, लेकिन हमारा मक़सद किसी को नुकसान पहुँचाना नहीं था। (*तीनों एक*

साथ बोलते हैं) हमारा मक़सद तुम लोगों को यह चेतावनी देना था कि अब जनता तुम्हारी कोई भी हरकत बर्दाशत नहीं करेगी। वह हर क़ानून जो पुराना, घटिया और ऊलजलूल है, लेकिन तुम लोगों के लिए फ़ायदेमंद है, हमें नामंज़ूर है। कोई भी ताक़त उसे जनता पर ज़बर्दस्ती लागू नहीं कर सकती।

टोडी : यह भी अच्छा मज़ाक है कि तुम बम भी फेंक रहे हो और यह दावा भी करते हो कि तुमने बम किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं फेंका था!

तीनों : हाँ, हम दावा करते हैं!

टोडी : यह झूठ है, सरासर झूठ!

तीनों : झूठे हम नहीं, तुम हो! हमें बम बनाने भी आते हैं और हमारे निशाने भी पक्के हैं। अगर हम चाहते तो गैलरी में बैठे-बैठे सर साइमन को निशाना बना सकते थे।

टोडी : (*जज की तरफ़ देखते हुए*) ये दहशतपसंद लोग हैं। बम बनाते, हैं, बम फेंकते हैं! सरकारी ख़ज़ाने लूटते हैं। इनका जो भी व्यक्ति गिरफ़्तार हुआ है, उसके पास ख़तरनाक किस्म के हथियार मिले हैं। जो गोली पुलिस सब-इंसपैक्टर सांडर्स के हवलदार चन्नण सिंह को लगी थी, वह उस गोली से मिलती-जुलती है, जो भगतसिंह की पिस्तौल से मिली है।

भगत : जब आप निहत्थे लोगों पर लाठीचार्ज करते हैं, लोगों के घरों की तलाशियाँ लेते है, जब आप मासूम जनता पर, बच्चों पर, औरतों पर गोलियाँ बरसाते हैं, तब तो कोई मुक़दमा नहीं चलता! जनरल डायर जलियाँवाला बाग़ में ख़ून की नदियाँ बहाता है, सैंकड़ों आदमियों का क़त्ल करता है, तो तुम्हारी सरकार उसे बीस हज़ार पौंड की थैलियाँ भेंट करती है! और जब हम अपने हक़ के लिए, अपनी माँगों के लिए लड़ते हैं, तो हमे दहशतपसंद और साजिश करनेवाले कहा जाता है, सिर्फ़ इसलिए कि हमारे हित तुम्हारे हित नहीं हैं, क्योंकि हमने कसम खाई है कि तुम्हारी जड़ें हिंदुस्तान से उखाड़ फेंकेंगे!

टोडी : तुमने अंग्रेज़ सरकार के ख़िलाफ़ साजिश की है, और तुम दहशतपंसद हो।

तीनों : हम देशभक्त हैं!

टोडी : यह झूठ है, बकवास है। तुम अकेले-दुकेले डाकुओं की तरह, क़ातिलों की तरह, चोरों की तरह, गुमनाम जंगली जानवरों की तरह यहाँ-वहाँ हमले करते घूमते हो। न तुम्हें कोई मानता है, न तुम्हारे पीछे कोई जनशक्ति है। जनता, जनता, जनता ... जिस जनता का नाम लेकर तुम शोर मचाते हो, वह तुम्हारे कारनामों से डरी हुई है ... तुम्हें जानती भी नहीं। तुम जनता को भड़काते हो ताकि वह बग़ावत करे और उसके बदले उसे मिलती हैं गोलियाँ, लाठियाँ। मैं दावे से कह सकता हूँ कि तुम्हारा अस्तित्व जनता पर बोझ है। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि जनता तुम्हारे साथ नहीं है।

भगत : सुनना चाहते हो? सुन सकोगे तुम? अगर हम यहाँ तुम्हारी इस ढकोसले की

अदालत में, जो जेल से भी बदतर है, इनक़लाब का नारा लगाएँगे, तो बाहर खड़े हज़ारों लोग हमारे साथ नारा दोहराएँगे।

टोडी : नॉनसेंस।

तीनों : इनक़लाब ज़िंदाबाद!

जैसे चारों तरफ़ की दीवारें ढह गई हों, नारे का जवाब आता है - इनक़लाब ज़िंदाबाद! सब घबरा जाते हैं। वे दोहराते हैं – इनक़लाब! आवाज़ आती है – ज़िंदाबाद! भगतसिंह नीचे उतरता है और राजगुरु की तरफ़ देखकर कहता है –

भगत : जज हैं ये, और तुम मुज़रिम।

राजगुरु : मिस्टर प्रॉसीक्यूटर, प्रोसीड!

भगतसिंह चीते की तरह लपकता है – दाएँ बाएँ ...

भगत : तुम लोग यहाँ, इस देश में लुटेरों की तरह दाख़िल हुए हो। हमारी मेहमाननवाज़ी, हमारी मासूमियत और हमारे भोलेपन का फ़ायदा उठाकर तुमने यहाँ नफ़रत के बीच बोए, हमें आपस में लड़वाया, और इस तरह चालाकी से यहाँ के शासक बन बैठे। यह धरती, यह देश जिसे सोने की चिड़िया कहा जाता था, आज ग़रीब देश समझा जाता है। यहाँ अन्न के भंडार होते थे, अब यहाँ धूल-मिट्टी उड़ती है। तुम लोगों ने हमारे देश का इतना शोषण किया कि हमारी अर्थव्यवस्था तबाह हो गई । तुम लोग यहाँ से कच्चा माल मिट्टी के मोल ले जाते हो, फ़िर उसी माल से तैयार सामान यहाँ लाकर सोने के भाव बेचते हो। तुम यहाँ कोई फ़ैक्टरी नहीं चलने देते ताकि यह देश हमेशा तुम्हारा मोहताज बना रहे। ढाके की जिस मलमल को पहनने के लिए फ़रिश्ते तरसते हैं, उसे बनानेवाले कारीगरों की उँगलियों में रंग-रूप सूरज और चाँद-सितारों की तरह झिलमिलाते थे, लेकिन तुमने वह मलमल उनसे छीन ली और उनकी उँगलियाँ काट दीं। लानत है तुम्हारी फ़रेबी सोच पर। लानत है तुम्हारी तहज़ीब पर।

तुम्हारे करनामों से खेतों में सूखा पड़ गया, फ़ैक्ट्रियों में भूख भर गई। तरक़्क़ी के नाम पर तुमने हमारी तहज़ीब ख़त्म कर दी, हमसे हमारा चरित्र छीन लिया, और जब हमने करवट बदली, तो हमारे सीनों पर संगीनें रख दीं।

हमारी पैदावार के साधनों पर तुमने क़ब्ज़ा कर लिया। हमारी हर ज़रूरत इंगलिस्तान से पूरी होने लगी। यहाँ के रजवाड़ों, जागीरदारों और भाड़े के टट्टुओं से गठजोड़ करके उन्हें पालतू कुत्तों की तरह पाला गया ताकि वे प्रजा के अधिकार कुचलते रहें और लोग सिर न उठा सकें।

हमारी फौज के तुमने टुकड़े-टुकड़े कर दिए। सिक्खों को जाटों से जुदा किया, जाटों को पठानों से तोड़ा, पठानों को राजपूतों से अलग किया, राजपूतों को मराठों से, और सबको बहादुरी के तमग़े दिए ताकि ये हमेशा इकाइयों में बँटे रहें, कभी एक झंडे के नीचे न खड़े हो सकें। तुमने ही यहाँ मजहब के नाम पर फ़साद करवाए। (*राजगुरु की तरफ़*) जज साहब, इन्हें ऐसी सज़ा दी जाए कि इनकी आनेवाली पुश्तें याद रखें, और फिर कभी कोई देश किसी दूसरे देश पर हमला करके वहाँ का शासक बन बैठने की हिम्मत न करें।

राजगुरु : मैं ऐलान करता हूँ कि इन लोगों को इस देश से निकाल दिया जाए। इनकी सब संपत्ति, वह पैसा, वह माल जो इन्होंने यहाँ की जनता से छीना है, अपने क़ब्ज़े में ले लिया जाए। यह मेरा फ़ैसला है। यह जनता का फ़ैसला है।

तीनों : इनक़लाब ज़िंदाबाद!
इनक़लाब ज़िंदाबाद!!
इनक़लाब ज़िंदाबाद!!!

अँधेरा

तीसरा अंक

सेंट्रल जेल। वार्ड नं 15– भगतसिंह कोठरी में क़ैद है। वह बहुत कमज़ोर दिखाई दे रहा है। कोठरी किताबों से भरी हुई है। वह पढ़ने में व्यस्त है। नंबरदार खाना लेकर आता है और भगतसिंह के आगे रखता है। यह वही नंबरदार है जो दूसरे अंक में हवलदार था।

नंबरदार : भगतसिंहजी, रोटी।

भगतसिंह देखता है, किताब रखता है और खाना खाने लगता है।

एक बात बताओ?

भगत : हाँ ....

नंबरदार : अब पढ़ने का क्या फ़ायदा?

भगत : मतलब?

नंबरदार : मतलब यह कि जल्दी ही आपको फाँसी दे दी जाएगी!

भगत : तुम्हें कैसे पता है?

नंबरदार : जब भी मौत के फ़रिश्ते आते हैं, कुत्ते रोने लगते हैं, क्योंकि वे फ़रिश्तों को देख लेते हैं।

भगत : तूने कभी फरिश्ते देखे हैं?

नंबरदार : देख नहीं सकता। लेकिन जब भी इस जेल में मौत आती है, मुझे भनक लग ही जाती है। फिर यहाँ के अधिकारी भी मुझसे कुछ नहीं छिपाते।

भगत : अच्छा!

नंबरदार : दो-तीन दिन से गुपचुप-गुपचुप कुछ बातें हो रही हैं।

भगत : हूँ ...

नंबरदार : आपने बताया नहीं फिर?

भगत : क्या?

नंबरदार : मैं यही सोचता रहता हूँ कि भगतसिंहजी चौबीस घंटे पढ़ते रहते हैं, यह जानते हुए भी कि वह कुछ घड़ियों के मेहमान हैं। आपको मौत से डर नहीं लगता?

भगत : तुम्हारा नाम क्या है?

नंबरदार : हमारे जैसे लोगों का नाम क्या होता है जी? दरोग़ा, हवलदार, जमादार, नंबरदार!

भगत : (*मुस्कुराकर*) हाँ ठीक ही कहते हो! तुम्हें बताऊँ, मैं इतना क्यों पढ़ता हूँ?

नंबरदार : हाँ ...

भगत : मैं अंत-अंत तक जीना चाहता हूँ।

नंबरदार : जी, कभी-कभी आपकी बातें मुझे बड़ी मुश्किल लगती हैं। अब देखो, मरने तक तो हर आदमी जीता ही है न!

भगत : (*हँसते हुए*) जीना भी एक अहसास होता है नंबरदार जी! मैं उस अहसास की धार को तेज़ करता हूँ।

नंबरदार : लेकिन उसका क्या फ़ायदा?

भगत : उसका फ़ायदा यह है नंबरदारजी कि मैं ज़िंदगी की ज़्यादा क़द्र कर सकूँ – यह ज़िंदगी जो ईश्वर ने हमें बख़्शी है, यह जीने की नियामत जो हमें मिली है, जो आदि से अंत तक, सिर्फ़ एक बार ही मिलती है, इसकी क़द्र कर सकूँ।

नंबरदार : फिर आपने भूख हड़ताल क्यों की थी?

भगत : यह दूसरा सवाल है!

नंबरदार : मुझे तो अभी भी समझ में नही आता है ...

भगतसिंह मुस्कुराता है

मुझे अगर थोड़ी देर बाद खाना मिले तो मेरी आँखें आँसुओं से भर जाती हैं। भगवान न करे, अगर किसी दिन खाना न मिले, तो मैं रो-रोकर ही मर जाऊँगा! लेकिन आप दो महीने भूखे रहे, अभी भी यक़ीन नहीं आता!

भगत : इसका राज़ बताऊँ?

नंबरदार : खुदा कसम ज़रूर बताओ!

भगत : राज़ की बात है!

नंबरदार : मैं इस राज़ का एक-एक लफ़्ज़ याद कर लूँगा। आज के बाद जब आप नहीं रहोगे तो दूसरे सियासी क़ैदियों और पूछनेवालों को बड़े फ़ख़्र से बताया करूँगा।

भगत : जो व्यक्ति दूसरों के लिए जीता है, वह कभी नहीं मरता।

नंबरदार : अल्लाह रसूख़ की कसम, फिर मुश्किल बात कही आपने!

भगत : अच्छा यह बता, कितने दिन हो गए तुझे यहाँ?

नंबरदार : दिन नहीं, ज़िंदगी गुज़र गई है यहाँ तो!

भगत : क्या जुर्म किया था?

नंबरदार : जुर्म तो कभी समझ में ही नहीं आया भगतसिंहजी! आज तक न जुर्म समझ में आया है, न क़ानून और न ही क़ानून के रखवाले! बहुत सोचने की कोशिश की, लेकिन दिमाग़ जवाब दे जाता है! मैं चौदह साल का था भगतसिंहजी जब दौड़-दौड़कर क़ैदियों का काम किया करता था। अफ़सरों का हाथ भी बँटाता रहता था। एक दिन दो मुलाक़ाती आए और एक मुज़रिम के लिए मिठाई दे गए। मैं दौड़कर मिठाई उसे दे आया, लेकिन मिठाई खाकर वह आदमी मेरे देखते ही देखते ठंडा हो गया। उस दिन से मुझे उम्रक़ैद की सज़ा हुई! फाँसी इसलिए नहीं हुई क्योंकि अफ़सरों ने बड़ी मदद की और मेरी उम्र भी कम थी। लेकिन यह सब हुआ क्यों, आज तक पता नहीं लग सका! अब यही सोचता हूँ कि ऐसे ही होता है, मैं क्या कर सकता हूँ!

भगत : तू हर रोज़ लोगों को फाँसी के लिए तैयार करता है, तब तेरे ऊपर कोई असर नहीं होता?

नंबरदार : बिल्कुल नहीं, कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे विवाह की तैयारी करा रहा होऊँ!

नंबरदार की बात पर भगतसिंह हँसता है,
वार्डर की आवाज़ आती है –

वार्डर : नंबरदार!

नंबरदार : आया सरकार!

दौड़ा जाता है – वापिस आता है –

नंबरदार : कोई मुलाक़ाती आया है आपका!

वह कोठरी का दरवाज़ा खोलता है। भगतसिंह बाहर निकलता है। नबरदार बर्तन उठाकर ले जाता है। भगतसिंह टहल रहा है ...

क्षणिक विराम

भगतसिंह एक कोने में खड़ा है। विजय कुमार सिन्हा दाख़िल होता है। वह दूसरे कोने पर खड़ा हो जाता है और भगतसिंह की ओर देखता है जो कि बेड़ियों में जकड़ा हुआ है।

क्षणिक विराम

विजय : कैसे हो भगतसिंह?

भगत : (*धीरे-से*) कुछ पलों का मेहमान हूँ!

ए अहले-वतन
चिराग़े-सहर हूँ, बुझा चाहता हूँ!

क्षणिक विराम

तू सुना, बाहर का क्या हाल है!

विजय : अंग्रेज़ों का बोलबाला है।

भगत : बड़ी ख़ुशी की बात है।

विजय : हमारा मक़सद पूरा हो गया है।

भगत : हाँ!

क्षणिक विराम

विजय : तू ख़ुश है न इससे?

भगत : विजय, मेरी आदत है, मुझे कभी तसल्ली नहीं होती ... कभी संतोष नहीं होता। मैं इसीलिए परेशान रहता हूँ।

विजय : परेशानी ही तो बड़प्पन की निशानी है।

भगत : पता नहीं तू क्या सोच रहा है! लेकिन मैं देश के बारे में सोच रहा हूँ!

विजय : देश को आज़ादी मिली समझ!
भगत : आज़ादी से क्या मतलब है तुम्हारा?
विजय : अंग्रेज़ों की गुलामी से आज़ाद होना।
भगत : बस!
विजय : बस तो नहीं!
भगत : और?
विजय : और?

क्षणिक विराम

क्या कर रहा था अभी?
भगत : नंबरदार से बातें कर रहा था।
विजय : अच्छा!
भगत : बहुत बढ़िया आदमी है – हर रोज़ कोई-न-कोई सवाल लेकर आता है।

क्षणिक विराम

विजय : तुझे किसी तरह की तकलीफ़ तो नहीं!
भगत : तकलीफ़ का अहसास ही नहीं!
विजय : फिर?
भगत : बस परेशानी का रोग है।
विजय : इतना सोचा मत कर!
भगत : (*हँसकर*) क्या करूँ फिर? ...

क्षणिक विराम

विजय : लेकिन इसका फ़ायदा क्या है?

भगतसिंह जोर से हँसता है ....

हँसता कैसे है?
भगत : अभी नंबरदार भी यही पूछ रहा था।
विजय : अच्छा!
भगत : हाँ।

विजय : फिर समझ गया वह तेरी बात?

भगत : समझाने की मैंने कोशिश ही नहीं की!

विजय : फिर?

भगत : बस सवाल का जवाब ही दिया है।

विजय : बातें ही करता रहता है उसके साथ?

भगत : नहीं!

विजय : फिर?

भगत : इतना वक़्त ही कहाँ मिलता है!

विजय : इसके अतिरिक्त ... बस परेशान रहता है?

भगत : सोचता रहता हूँ!

विजय : अच्छा!

भगत : आजकल लेनिन की जीवनी पढ़ रहा हूँ।

विजय : अच्छा!

भगत : सोचता हूँ उससे पहले ख़त्म हो जाए तो अच्छा है।

विजय : उससे पहले?

भगत : फाँसी से पहले!

क्षणिक विराम

विजय : तेरे लिए हज़ारों नहीं, लाखों भारतवासियों ने अपील की है। हर रोज़ वायसराय का हज़ारों तार भेजे जा रहे हैं।

भगतसिंह हँसता है ...

भगत : देख विजय, हमारी किस्मत तो मौत है। और फिर यह मौत और मौत की रस्म, दोनों चुनी भी हमने खुद हैं।

विजय : कुछ दिन और जीवित रह लोगे तो क्या नुकसान हो जाएगा!

भगत : जीने का बोझ बर्दाश्त नहीं होगा।

विजय : और परेशान होगा, और सोचेगा, शायद कुछ कर सके!

भगत : हाँ!

विजय : फिर क्या तय किया है?

भगत : विजय, कहीं ऐसा न हो कि फाँसी रुक जाए।

विजय : ऐसे क्यों सोचता है?

भगत : हर कहानी का कोई-न-कोई अंत होता है!

विजय : अपनी सारी कुर्बानी, सारी शख़्सियत को एक कहानी कहकर ख़त्म कर देगा!

भगत : हाँ, बस एक कहानी! तू, मैं और आज़ादजी। भगवतीचरणजी तो ख़त्म ही हो गए। मुझे छुड़ाना चाहते हो! मुझे बचाना चाहते हो! जतिन'दा भूख हड़ताल करते हुए शहीद हो गए। सुखदेव और राजगुरु मेरे साथ हैं। सब तैयार हैं वेदी पर चढ़ने के लिए।

विजय ख़ामोश है

क्षणिक विराम

देख लेना, हम सब की कहानी किताबों के पन्नों पर लिखी जाएगी एक दिन। गुमनाम-से लोग और गुमनाम-सी किताबें। गुमनाम यादें। सिर्फ़ गुमनाम-से कुछ लोग ही आया करेंगे हमारी शहादत पर आँसू बहाने! बस!

विजय : इसकी वजह!

भगत : याद है अपना मक़सद! हमने यह भी सोचा था कि इस देश में किसानों और मज़दूरों का राज होगा!

विजय : हाँ, हमने कसम खाई है ... वह कसम, जो इतिहास के पन्नों पर लिखी जाएगी!

भगत : लेकिन यह मक़सद पूरा कहाँ हुआ है?

विजय : अगर हम यह मक़सद पूरा नहीं कर सके, तो आनेवाली पीढ़ियाँ उसे पूरा करेंगी।

भगत : हम पूरा नहीं कर सके – कितना कड़ुवा वाक्य है यह! हम पूरा नहीं कर सके! इतने बोझ से मरना! अधूरी तमन्नाएँ साथ लिए मरना! मैं सोचता हूँ, कैसे जान निकलेगी मेरी! अभी तो मेरा देश ग़रीब है, कगाल है! अभी तो आम आदमी भूखा और बेबस है! अभी तो मज़दूरों को उनके हक भी नहीं मिले! अभी तो किसानों की किस्मत दूसरों के हाथों में खेल रही है! विजय, हमने जो ख़्वाब देखा था, जो सपना सँजोया था, जिस निज़ाम की नींव रखी थी, वह सब अधूरा है, अपूर्ण है।

विजय : हाँ ...

भगत : तू आ गया है, अच्छा किया!

विजय : क्यों!

भगत : नहीं तो मैं अकेला ही कुढ़ता रहता, सड़ता रहता। अब खुशी महसूस कर रहा हूँ। एक ऐसे व्यक्ति को मैंने अपने मन की बात बताई है जो बाहर आज़ाद हवा में घूम रहा है।

विजय : हुक्म करो, मैं क्या करूँ!

भगत : बस ये बातें हवा के माथे पर लिख देना। चाँद-सितारों पर सजा देना ये बातें। जनता को जागरूक कर देना। कहना – दोस्तो, अंग्रेज़ बड़े चालबाज़ हैं। वे खुद तो जा रहे हैं क्योंकि उनके पाँव उखड़ चुके हैं, लेकिन वे कांग्रेस के साथ समझौते करके, यहाँ के पूँजीपतियों रजवाड़ों से मिलकर, अपने हित बचाए रखेंगे! खुद तो चले जाएँगे, लेकिन सांप्रदायिकता छोड़ जाएँगे!

विजय : फिर जनता?

भगत : यहीं तो मेरी जान निकलती है! जनता आज कांग्रेस के हाथ में है। तात्कालिक तौर पर यह बोझा कांग्रेस पर आ गया है कि वह देश की बागडोर सँभाले। लेकिन कांग्रेसी आंदोलन या तो समझौते से ख़त्म हो जाएगा या फिर अपनी ही कमियों के चलते ख़त्म् हो जाएगा।

विजय : कितनी भयानक सच्चाई है यह! कितना कठोर सत्य!

भगत : एक वक़्त ऐसा भी आएगा जब इस देश में हर तरफ़ अफ़रा-तफ़री मचेगी। चारों तरफ़ बेचैनी होगी। जनता कांग्रेस से मायूस हो जाएगी! फिर ऐसे हालात पैदा होंगे, जो आज हैं। एक और इनक़लाब जन्म लेगा! कांग्रेस का साथ केवल वही लोग देंगे, जिन्हें लाभ मिलेगा – बुर्जवा-नीमबुर्जवा, पूँजीपति-नीमपूँजीपति। इस तरह नौजवान कांग्रेस का साथ छोड़ देंगे। आनेवाली नस्लों को कांग्रेस से कोई उम्मीद नहीं रहेगी, क्योंकि कांग्रेस के पास कोई नया कार्यक्रम नहीं होगा। मज़दूर और किसान कांग्रेस से अलग होंगे, क्योंकि इनका कांग्रेस से कोई वास्ता नहीं है – वह इस वर्ग से नहीं है!

विजय : कमाल है, लोग हमें दहशतपंसद और आतंकवादी कहते हैं!

भगत : लोग नहीं कहते विजय, हुकूमत कहती है। कांग्रेस कहती है, क्योंकि वह केवल अपने भले की बात सोचती है। वह अपनी राह में आनेवाले पत्थरों को दूर फेंकना चाहती है।

विजय : पत्थर?

भगत : हाँ विजय, रास्ते के पत्थर। वे जानते हैं हमारा बलिदान निःस्वार्थ है ... हमारा मक़सद लोगों की भलाई है, इसलिए अधिकतर नौजवान हमारे साथ हैं। कांग्रेस सिर्फ़ इसलिए जद्दोजहद कर रही है कि वह देश की बागडोर सँभाले और हमने क्रांति की मशाल इसलिए जलाई है कि हमें सिर्फ़ मरना है!

विजय : आज़ादी के बाद क्या होगा?

भगत : कैसी आज़ादी?

विजय : वह झूठी, मनगढ़ंत और बेहूदा आज़ादी! वह चोला बदलनेवाली आज़ादी! वह आज़ादी जिसे पाकर हम बहुत खुश होंगे।

भगत : तुम सबको भुला दिया जाएगा। हुकूमत में तुम्हारा कोई योगदान नहीं होगा।

विजय : *(आह भरकर)* हाँ भगतसिंह!

भगत : सिर्फ़ देख सकोगे – बद से बदतर होते हालात को!

विजय : जीना मुश्किल हो जाएगा!

भगत : तुम्हारा जीना मुश्किल हो जाएगा और हमारा मरना!

विजय : फिर किया क्या जाए?

भगतसिंह बेइख़्तियार हँसता है ....

भगत : हमने अपना काम कर दिया है, विजय! हमने तो अब अलविदा कह दिया है!

विजय : एक और बात सुनी है तुमने?

भगत : कह दे आज तू जो भी कहना चाहता है ... सारी की सारी बातें। देखें दो और दो चार कैसे होते हैं।

विजय : गाँधी-इर्विन पैक्ट हुआ है ...

भगत : अच्छा!

विजय : जिसके तहत सभी राजनीतिक बंदी रिहा कर दिए जाएँगे।

भगत : अच्छा!

विजय : लेकिन तुम लोग राजनीतिक बंदियों की श्रेणी में नहीं आते!

भगत : और ?

विजय : तुम लोगों को फाँसी कांग्रेस के कराची अधिवेशन से पहले ही लगाई जाएगी।

भगतसिंह हँसता है ...

भगत : अगर तूने यह बात पहले बताई होती, तो मैं इतनी बहस न करता?

विजय : हाँ ...

भगत : यानी अंग्रेजों के बाद हमारी किस्मत की मालिक कांग्रेस बन गई है!

वियज : हाँ !

भगत : चलो, दूध का दूध, पानी का पानी हो गया। सारा क़िस्सा ही ख़त्म हो गया। सब बातें तय हो गईं।

विजय : हाँ!

क्षणिक विराम

अब मैं चलूँ?

भगत : हाँ, विजय!

विजय जाने के लिए मुड़ता है .....

विजय ... विजय!

विजय : हाँ भगत!

मुड़कर भगतसिंह की ओर देखता है ...

भगत : क्या ऐसा नहीं हो सकता ...

विजय : क्या?

भगत : कि हम लोग फिर जन्म लें ... सब के सब साथी ... एक नए इनक़लाब की नींव रखने के लिए!

दोनों ज़ोर-ज़ोर से हँसते हैं और पास आकर एक-दूसरे के गले मिलते हैं। विजय की आँखें भर आती हैं। वह जाने के लिए मुड़ता है..

विजय : अलविदा मेरे दोस्त, अलविदा! मेरे साथी, मेरे हमसफ़र, अलिवदा!

विजय जल्दी से निकल जाता है ...

अँधेरा

रौशनी होती है

भगतसिंह की परछाईं दिखाई दे रही है! वह सोच रहा है जैसे अपने-आपसे बातें कर रहा हो ... जैसे मरने से पहले आखिरी बार बातें कर रहा हो!

भगत : विजय से मिल लिया! चलो यह रिश्ता भी निभा लिया। मैं इस बात को दिल में लेकर मरूँगा और वह इस याद को दिल में लेकर जिएगा। मैं अब चैन से मर सकूँगा और उसकी ज़िंदगी पर बोझ है, मकसद की ज़िम्मेदारी।

क्षणिक विराम

बोलने का ढंग बदल रहा है ...

ट्रिब्यूनल के सामने बापूजी को मेरी तरफ़ से सफ़ाई की प्रार्थना नहीं करनी चाहिए थी। उन्हें पता है कि मेरे सियासी विचार उनसे मेल नहीं खाते। वे अपने पुत्र की – भगतसिंह की जान बचाना चाहते हैं, लेकिन वह अपने साथियों से अलग नहीं होना चाहता। भगतसिंह, जो बचपन से ही मरने की तमन्ना दिल में पाले हुए है ... वतन की ख़ातिर जान क़ुर्बान करने के लिए सिर पर कफ़न बाँधे घूम रहा है, उसके लिए ज़िंदगी माँगना, भगतसिंह का दुश्मन बनना है। काश बापूजी ऐसा न करते!

क्षणिक विराम

जज़्बाती आवाज़ में ...

अगर आज चाचाजी मेरे पास होते, तो मैं उनके क़दम चूम लेता। उनकी आँखों में झाँकता – देखता उस ज्योति को, जो उनकी ज़िंदादिली की निशानी है। मैं उनसे आशीर्वाद माँगता और कहता कि आपके अरमान पूरे कर रहा हूँ ... अंग्रेज़ों में भगदड़ मच गई है – आज़ादी आ रही है – आज़ादी मुबारक़ हो। आओ अपने देश की धरती पर अपने मुबारक़ क़दम रखो!

क्षणिक विराम

अब तो सिर्फ़ एक ही रिश्ता बाक़ी है, जो मेरे शरीर और दिल को गर्म रख रहा है ... जिससे मैंने अपना शरीर उधार लिया था, और वापिस नहीं किया ... जिसका मैं क़र्ज़दार हूँ – वह मेरी माँ है, जिसका मैं देनदार हूँ ... माँ – मेरी माँ!

रौशनी धीरे-धीरे फैलती है। माँ सामने खड़ी है! जैसे दोनों कोई सपना देख रहे हों। वह अपने पुत्र की तरफ़ ऐसे ग़ौर से देख रही है जैसे अभी रो पड़ेगी।

क्षणिक विराम

माँ आगे बढ़ती है, हँसकर बोलती है

माँ : ला डाल दे मेरी झोली में, जो भी तूने कमाया है! चल जल्दी कर!
भगत : तू अपनी आँखें बंद कर!
माँ : भागेगा तो नहीं?
भगत : नहीं!
माँ : तेरा कुछ पता नहीं, अभी है, अभी ग़ायब! हमेशा धोखा दे जाता है मुझे!
भगत : तेरी कसम माँ, तू आँखें बंद कर!
माँ : ले!

वह ज़मीन से मिट्टी उठाता है और माँ की झोली में डाल देता है –

भगत : ले, अब देख!

वह धीरे-धीरे झोली खोलती है कि हवा न निकल जाए ...

माँ : हवा भर दी होगी!
भगत : ध्यान से देख, माँ!

वह मिट्टी उठाती है ...

माँ : यह क्या है भगत!
भगत : यह मेरी चिता की मिट्टी है, माँ! मेरे जीवन की सारी कमाई!

क्षणिक विराम

माँ : किस बेटे ने अपनी माँ को ऐसी कमाई दी होगी!
भगत : हाँ माँ!

वह मिट्टी को पल्लू में बाँध लेती है ...

माँ : मैं बहुत भाग्यशाली माँ हूँ!
भगत : तू ही न कहा करती थी कि मैं तेरा भाग्यशाली बेटा हूँ! आज तेरे बेटे की सारी मुरादें पूरी हो रही हैं!

माँ : (*भरे हुए गले से*) मेरा भाग्यशाली बेटा!

क्षणिक विराम

उसकी बेड़ियों को छूकर देखती है –

माँ : ये चुभती नहीं?

भगत : नहीं!

माँ : कैसे सोता होगा इन्हें पहनकर?

भगत : कम ही सोता हूँ ...

माँ : जागता रहता है?

भगत : हाँ।

माँ : लेकिन मैं वहाँ सिर-मुँह ढककर सोई रहती हूँ!

भगत : मैं इसीलिए जागता रहता हूँ कि देश की हर माँ सुख की नींद सो सके!

माँ : मेरे साथ फ़रिश्तों की तरह क्यों बोल रहा है!

भगत : जब तू दूर रहकर मेरे साथ बातें करती है तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं तुझसे अलग हूँ! और जब तू ममता-भरे हाथों से मुझे छूकर बात करती है तो मैं फिर भगतसिंह बन जाता हूँ, तेरा बेटा भगतसिंह!

वह उससे गले मिलती है, बैठ जाती है! भगतसिंह उसकी गोद में सिर रखता है! वह उसके सिर पर हाथ फेरती है –

माँ : जब मैं घर से चलने लगी तो सोचा था कि अपने बेटे के गले लगकर रोऊँगी ... अपने मन की भड़ास निकालूँगी! मेरा कलेजा मुँह को आ रहा था! फिर मैं घर से निकली, तो मुझे मुहल्लेवालों ने देखा, अपनों-बेगानों ने देखा! आते-जाते और अपने कामों में व्यस्त सब लोगों ने देखा। मुझे ऐसा लगा जैसे सारा काम रुक गया है। सबने धीरे-से, सहमे हुए स्वर में एक-दूसरे के कानों में कहा–भगतसिंह की माँ जा रही है। मैं दहाड़ें मारकर रोनेवाली थी। लेकिन यह देखते ही जैसे मेरे होंठ सिल गए। एकाएक मैंने महसूस किया कि मेरे बेटे का कितना सत्कार है इनके मन में ... कितना प्रेम करते हैं ये उसे! एक बुजुर्ग ने, जो उम्र में मुझसे बड़ा था, मेरे पाँव छुए और कहने लगा – कितनी धन्य है तू, जो भगत जैसे बेटे को जन्म दिया है! मैं एकदम पीछे हट गई और कहा – "भगतसिंह मेरा ही नहीं, तुम्हारा भी बेटा है! वह जितना मेरा है, उतना

ही तुम्हारा! मेरा है भी कितना!" जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ती गई, लोगों की भीड़ मेरे पीछे आने लगी-मीलों दूर तक आती रही! लोग मेरी ओर इशारे कर कह रहे थे - देखो भगतसिंह की माँ जी रही है! सच कहूँ भगतसिंह, मैं अपना सब दुख भूल गई!

क्षणिक विराम

मैं अपना दुख भूल गई!

भगतसिंह उसकी गोद से उठकर दूर जा खड़ा होता है! माँ उसकी ओर देखती है...

क्षणिक विराम

नंबरदार आता है ...

भगत : माँ, वक़्त ख़त्म हो गया है!
माँ : बस इतनी देर ही भगत!
भगत : यहाँ यही नियम है!
माँ : तूने कितने पल रखे हैं मेरे लिए भगत?
भगत : माँ, मैंने तुझे कभी अपनी धरतीमाँ से अलग नहीं समझा।
माँ : बहुत अच्छा किया, बेटा! मैं यूँ ही तुमसे गिले-शिकवे करने लगी थी। माँ का दिल है न! सब कुछ बर्दाश्त कर सकती हूँ, लेकिन बेटे की मौत ...

जैसे उसके गले से एक चीख़ निकलने को हो। लेकिन वह अपने मुँह पर हाथ रख लेती है।

क्षणिक विराम

भगतसिंह पास आकर उसके पाँव छूता है -

भगत : मुझे आशीर्वाद दे माँ!
माँ : सौ साल जिये तू!

भगत : यह कैसा अशीर्वाद दे रही है, माँ?

माँ : और क्या यह आशीर्वाद दूँ कि तू जल्दी मरे!

भगत : हाँ!

माँ : भगत ...?

भगत : हाँ माँ ....

वह फिर उसके पाँव छूता है!

माँ : सिपाही की तरह तू अपने वतन के लिए कुर्बानी दे बेटा।

भगतसिंह अपनी माँ के पाँव छूकर माथे पर हाथ लगाता है। फिर मुँह फेरकर खड़ा हो जाता है।

नंबरदार : चलो, वक़्त ख़त्म हो गया है।

आँसुओं को रोके हुए माँ उसकी ओर देखती है और बाहर चली जाती है। पीछे-पीछे नंबरदार भी चला जाता है।

क्षणिक विराम

भगतसिंह कोठरी में दाख़िल होता है, नंबरदार ताला लगाता है।

अँधेरा

रोशनी फैलती है

शाम, 23 मार्च, 1991

टोडी तेज़ी से दाखिल होता है! अब वह वॉर्डर के लिबास में है! उसके पीछे-पीछे नंबरदार पानी की बाल्टी और फाँसी के कपड़े लेकर दाख़िल होता है। भगतसिंह पढ़ रहा है। टोडी घबराया हुआ है ...

टोडी : भगतसिंहजी, आपको राजगुरु और सुखदेव के साथ आज शाम फाँसी दी जाएगी!

भगतसिंह किताब बंद करता है और उसकी तरफ़ देखता है ...

देखो किसी तरह की ज़िद मत करना! आपकी अब एक नहीं चलनी! जेल में फौज बुला ली गई है – एक विशेष दस्ता जो सिर्फ़ इसी मक़सद से बुलाया गया है। जेल के चारों तरफ़ फौज का सख़्त पहरा है, कोई पंछी भी नहीं फड़क सकता। अगर आप में से किसी ने भी आवाज़ ऊँची करने या चूँ भी करने की कोशिश की, तो गोलियों से भून दिया जाएगा। यह आदेश है। किसी को कानोंकान ख़बर तक नहीं होगी।

भगतसिंह कोई जवाब नहीं देता ...

यह ... यह अंग्रेज़ी सल्तनत है – अंग्रेज़ों की सरकार, जिनके राज में कभी सूरज नहीं डूबता। आप दस-बीस या पचास लोगों की बग़ावत हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि सीधे तरीक़े से क़ानून की बात मान लो!

भगत : (*धीरे-से*) तुम कुछ घबराए हुए-से लग रहे हो!

टोडी : कौन घबराया हुआ है?

भगत : एक बात बताओ?

टोडी : मैं तुम्हारे किसी भी सवाल का जवाब नहीं दूँगा।

भगत : यह भी हुक्म है?

टोडी : हाँ!

भगत : ठीक है!

टोडी : नंबरदार।

नंबरदार : जी सरकार!

टोडी : जल्दी करो। किसी तरह की कोई गड़बड़ हो, तो फ़ौरन ख़बर करो!

नंबरदार : जी हुज़ूर!

टोडी : मैं बाक़ी दोनों को लेकर आता हूँ!

नंबरदार : जी!

वार्डर निकल जाता है ...

नंबरदार : (*हँसते हुए*) तैयार हो जाओ भगतसिंह, हम तुम्हें दूल्हा बनाने आए हैं।

नंबरदार ताला खोलता है और भगतसिंह की बेड़ियाँ उतारकर उसे नहाने के लिए पानी की बाल्टी देता है, काले कपड़े देता है और दरवाज़ा बंद कर लेता है। भगतसिंह जेल के कपड़े उतारकर नहाता है और काले कपड़े पहन लेता है।

भगत : नंबरदारजी, बड़ी तमन्ना थी, ख़्वाहिश थी मन में ... और माँ से वादा भी किया था। चलो आज उस वादे को पूरा कर ही देते हैं।

नंबरदार : आपको पता है, सभी नंबरदार आपके पास आते हुए डरते थे! फिर मैंने कहा – भगतसिंह मेरा दोस्त है, एक ख़ास दोस्त! लाओ यह नेक काम मैं ही करूँ।

भगत : बहुत अच्छा किया आपने!

नंबरदार : मैं जानता था कि फाँसी का नाम सुनकर आप खुशी से झूम उठोगे।

भगत : ठीक सोचा था आपने। लेकिन एक बात तो बताओ?

नंबरदार : पूछो!

भगत : फाँसी तो कल सुबह दी जानी थी? और यह भी मैं जानता हूँ कि ब्रिटिश राज में आज तक किसी को शाम को फाँसी नहीं दी गई!

नंबरदार : हुकूमत आपके ऊपर बड़ी मेहरबानी कर रही है। आपकी सुविधा के लिए कानून बदल दिए गए हैं।

भगत : खुशकिस्मती है हमारी।

नंबरदार : एक वजह और बताऊँ? लेकिन किसी को बताना नहीं।

भगत : अब तो सिर्फ़ मौत के फ़रिश्तों को ही बता सकूँगा।

नंबरदार : उनको भी मत बताना। मुझे नौकरी से जवाब मिल जाएगा। लेकिन आप जान लो, भाड़ में जाए ऐसी नौकरी। दरअसल बात यह है कि सब अफ़सरों को हाथों-पैरों की पड़ गई है।

भगत : अच्छा!

नंबरदार : काँप रहे हैं!

भगत : क्यों?

नंबरदार : क्यों? आप जेल से बाहर देखो – हज़ारों लोगों की भीड़ आई हुई है। उन्हें कहीं से ख़बर लग गई है कि आपको फाँसी होनेवाली है। सुन रहे हैं न आप! बूढ़े, बच्चे, जवान – सब इकट्ठा हो रहे हैं। हर पल उनकी भीड़ बढ़ रही है। कल सुबह तक तो पूरा हिंदुस्तान इकट्ठा हो जाएगा। औरतें, बूढ़े, बच्चे–सब

रो-रोकर निढाल हो रहे हैं, जैसे उनका कोई सगा-संबंधी मर रहा हो। नौजवान ऐसे गुस्से में घूम रहे हैं जैसे दुश्मन का इंतज़ार कर रहे हों। जेल के सभी दरवाज़ों पर सख़्त पहरा बिठा दिया गया है। हर पल फौजियों की लॉरियाँ भर-भरकर आ रही हैं। यह बात चंद जेल-अधिकारियों के अलावा कोई नहीं जानता आपकी लाशें क़ायदे के मुताबिक आपके वारिसों को नहीं दी जाएँगी। आपके घरवालों को ख़बर भी नहीं दी गई। अफ़सरों को डर है कि आपकी लाशें अगर लोगों के सामने आ गईं तो हो सकता है बग़ावत हो जाए ... इनक़लाब आ जाए। जेल की पिछली दीवार तोड़ी जा रही है। आपके लिए नए-नए क़ानून बनाए जा रहे हैं। लाशों का दाह-संस्कार कहाँ किया जाएगा, कोई नहीं जानता! यह सब देखकर मुझे बड़ा मज़ा आ रहा है!

वह चुप हो जाता है। 'घोड़ियाँ' (विवाह-गीत) गाने की आवाज़ उभरती है, जैसे हिंदुस्तान की सभी बहनें भगतसिंह को दूल्हा बना रही हों! धुन वही है जो आमतौर पर होती है, लेकिन उसमें इतना दर्द है जैसे कोई भीगे स्वर में गा रहा हो –

आवाज : आओ री सखियो, मिलकर घोड़ियाँ गाएँ –
बारात हो गई है तैयार री हाँ!

मौत दुल्हन को ब्याहने चला
दूल्हा भगतसिंह सरदार री हाँ!

झंडा तो पकड़ा दूल्हे ने जुल्मो-सितम का,
मार सब्र की तलवार री हाँ!

भारतमाँ ने टीका है किया
पानी पिया है उससे वार री हाँ!

फाँसी के तख़्त को समझकर पलंग
बैठा है चौकड़ी मार री हाँ!

फाँसी की रस्सी का इक हार बनाकर
डाल बैठा गले में हार री हाँ!

फाँसी का सिर पर मुकुट है सजाया
सेहरा बना झालरदार री हाँ
राजगुरु सुखदेव सरबाले

राजगुरु और सुखदेव दाख़िल होते हैं। नंबरदार उनके हाथ रस्सी से पीछे बाँधता है।

दूल्हा भगतसिंह सरदार री हाँ!

माता पुकारे, हाय पुत्र मेरा
रोते हैं भाई दहाड़े मार री माँ

बहन बिचारी गाए विरह गीत वे भैय्या
किसको सुनाये दिल का हाल री माँ!

तैंतीस करोड़ तेरे बराती हे दूल्हे
पैदल और कोई सवार री माँ!

काली पोशाकें पहनकर चढ़ी बारात
दुश्मन भी हो गए तैयार री हाँ!

आओ री बहनो मिलकर गाएँ गीत
बारात तो हुई है तैयार री हाँ।

नंबरदार भगतसिंह के हाथ भी बाँध चुका है। भगतसिंह राजगुरु और सुखदेव की ओर बढ़ता है। वे भगतसिंह की ओर देखकर मुस्कुराते है!

सुखदेव : बस एक अंतिम इच्छा थी – आज़ादी की वेदी पर शरीर का दिया जलाने की! चलो आज वह भी पूरी हो गई!

राजगुरु : मेरा तो दिल कर रहा है मैं संस्कृत के श्लोक गाऊँ! वे श्लोक जिनका अर्थ मैं स्वयं नहीं जानता।

भगत : वह क्यों?

राजगुरु : जब मैं बहुत ख़ुश होता हूँ तो संस्कृत बोलने लगाता हूँ!

सब मुस्कुराते हैं।

भगत : अंतिम समय फिर मुझे यह महसूस हो रहा है कि भारतवासी कितने भावुक, भोले और महान हैं! बस बात मन में आने की देर है कि जान तक देने को तैयार हो जाते हैं। प्रेम भी करते हैं तो अ थाह, जिसमें सिर्फ़ देना ही देना होता है। यह उन्हीं का दिया हुआ विश्वास है कि आज हम हँसते-हँसते अभिमान के साथ फाँसी का फंदा चूमने जा रहे हैं।

राजगुरु : जनता महान है!

सुखदेव : जनता की जय!

तीनों फाँसी चढ़ने के लिए आगे बढ़ते हैं –

वार्डर दो मातहतों के साथ प्रवेश करता है! एक अंग्रेज अधिकारी भी साथ है। भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी के फंदे पहनाए जाते हैं।

वार्डर : (*स्वगत*) कमाल की तिकड़ी है तुम्हारी! जी चाहता है तुम पर फूलों की वर्षा करूँ!

तीनों : (*इकट्ठे, धीरे-धीरे ठहरे हुए स्वर में बोलते हैं*) हमारी पहली और आख़िरी ख़्वाहिश है इनक़लाब! इनक़लाब ज़िंदगी का पहला उसूल है। इनक़लाब ज़िंदगी के लिए ज़रूरी है। भारत में इसकी जद्दोजहद तब तक चलती रहेगी जब तक मुट्ठी-भर ख़ुदमुख़्तार लोग अपने फ़ायदे के लिए आम जनता को लूटते रहेंगे। लुटेरा भारतीय हो या अंग्रेज या दोनों, वे सब मिलकर भी हमारे संघर्ष को नहीं रोक पाएँगे!

ऊँचे स्वर में नारा लगाते हैं –

इनक़लाब ज़िंदाबाद!

जेल के बाहर से जोशीली आवाज़ें आती हैं–

इनक़लाव ज़िंदावाद!
इनक़लाब ज़िंदावाद!
इनक़लाव ज़िंदावाद!

नंबरदार के रोने की आवाज़ आ रही है! दबी हुई, घुटी हुई और धीरे-धीरे ...

ख़ामोशी। क्षणिक विराम

रौशनी होती है! भगतसिंह की परछाईं दिखाई दे रही है। काले कपड़े पहने है, चेहरा स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा। बोलने का ढंग ऐसा है जैसे कोई रूह बोल रही हो ... इस दुनिया की नहीं, किसी और दुनिया की आवाज़ हो – भारी आवाज़ ...

भगत : जब जनता जागती है तो हुकूमतें काँप उठती हैं। जिस हुकूमत की बुनियाद ज़ोर-ज़बर्दस्ती और जुल्मो-सितम पर टिकी हो, जनता के हितों की रक्षा न करके जो उसका ख़ून चूसे, उसे लूटे, वह अपनी ताकत खो बैठती है ... अपना यक़ीन खो बैठती है। जागी हुई जनता से वह डरती है – चूहे की तरह! जिस हुकूमत के राज्य में सूरज नहीं डूबता था वह आज एक ऐसे एकांत की तलाश में है, जहाँ कोई व्यक्ति न हो। हँसी आती है मुझे यह सोचकर कि और तो और, वे हमारी लाशों से भी डरते रहे!

वह पुल देख रहे हैं न! वह सतलुज दरिया का पुल है। पिछली रात कड़ाके की ठंड पड़ी थी, इतनी ठंड कि दाँत बजते थे! लेकिन वे सब हमारी लाशों को ठिकाने लगाने आए थे। बुरी तरह डरे हुए, सहमे हुए, भूत-प्रेतों की तरह! एक-दूसरे की आवाज़ों से भी वे डरे हुए थे! उन्होंने हमारी लाशों की बोटी-बोटी कर दी! टाँगें, बाँहें, हाथ – सब जिस्म से अलग कर दिए! यहाँ तक कि उँगलियाँ भी अलग कर दीं! उस समय मैंने महसूस नहीं किया था, लेकिन अब देख रहा हूँ कि उनके वहशी और जल्लाद हाथों ने हमारी बोटियाँ काटकर, जलाकर हमारा नामोनिशान मिटाना चाहा! लेकिन वे पगले क्या जानें कि हमारा वह अस्तित्व तो एक बग़ावत थी! हमारी ज़िंदगी बग़ावत थी, हमारी मौत

बगावत थी। बग़ावत के ख़यालों को उन्होंने ख़त्म करने की चेष्टा की – एक निष्फल चेष्टा! वे नहीं जानते थे कि ख़यालों के पीछे एक सोच होती है, जद्दोजहद होती है, ऐतिहासिक घटनाएँ होती हैं, गति होती है, जिसे कोई हुकूमत और कोई ताक़त नहीं रोक सकती।

लेकिन आज जबकि मैंने नया जन्म लिया है, और आपके सामने खड़ा हूँ, तो मैं महसूस कर रहा हूँ कि हमारी शहादत, हमारी मौत व्यर्थ नहीं हुई, क्योंकि हमारे उन ख़यालों और उद्देश्यों की पूर्ति अभी नहीं हुई है! किसान आज भी भूखे हैं। मज़दूरों को उनकी मेहनत का फल आज भी नहीं मिला है। उनकी मेहनत को आज भी पूँजीपति खा रहे हैं। जनता उसी तरह परेशान है बल्कि और भी बुरी हालत में है। हम आज भी शून्य से शून्य तक भटक रहे हैं ... रूहों की तरह डोल रहे हैं, क्योंकि हमारे उद्देश्य पूरे नहीं हुए। इसलिए आज यह ज़िम्मेदारी हम तुम्हारे कंधों पर डालते है, अपना भार तुम्हें सौंपते हैं। क्या हमारे इतने बड़े देश में आज कोई भी देशभक्त नहीं! क्या आज़ादी के वे जज़्बे, जो हमारे मन में थे, आज मर चुके हैं? क्या हमारी क़ौम सो गई है? क्या मज़दूर और किसान अपने हक़ों के लिए लड़ नहीं सकते? मुझे यक़ीन नहीं हो रहा – यक़ीन होगा भी नहीं, क्योंकि इनक़लाब जीवन का अनिवार्य अंग है। इनक़लाब ज़िंदगी का नियम है। इनक़लाब की रफ़्तार को कोई ताक़त नहीं रोक सकती। मेरे और तुम्हारे बीच मौत की वादी है। मैं तुम्हें देख नहीं सकता, वरना अभी तुममें से एक-एक पर उँगली रखकर बताता कि तुम भगतसिंह हो, तुम राजगुरु हो, तुम सुखदेव हो! तुम उनसे भी बढ़कर हो, क्योंकि तुम ज़िंदा हो! अब यह भार ... यह ज़िम्मेदारी तुम्हारे कंधों पर है कि तुम इनक़लाब की रफ़्तार तेज़ करो ... अपनी जान की बाज़ी लगाकर इनक़लाब की रफ़्तार तेज़ करो ...

धीरे-धीरे जज़्बाती होते हुए –

इनक़लाब ज़िंदाबाद! इनक़लाब ज़िंदाबाद! इनक़लाब ज़िंदाबाद!

अँधेरा

परदा गिरता है

सागर सरहदी

पूरा नाम गंगा सागर तलवार। पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त (अब पाकिस्तान) के बफ्फा नामक कस्बे (जिला : हज़ारा) में जन्म। सेंट ज़ेवियर्स कॉलिज, मुंबई, से अंगरेज़ी साहित्य में स्नातक की उपाधि।

वामपंथी विचारधारा से प्रेरित। इप्टा के साथ सक्रिय जुड़ाव। सुप्रसिद्ध लेखक, रंगकर्मी और फिल्मकार। मूलतः उर्दू और पंजाबी में लिखते रहे हैं।

उर्दू में प्रकाशित कृतियाँ : *तन्हाई* (तीन अंकीय नाटक), *ख़याल की दस्तक* (छह एकांकियों का संग्रह), *आवाज़ों का म्यूज़ियम* (बीस कहानियों का संग्रह)

पंजाबी में प्रकाशित कृतियाँ : *भगतसिंह दी वापसी* (तीन अंकीय नाटक), *मसीहा* (तीन एकांकियों का संग्रह)।

पटकथाएँ : *कभी कभी, नूरी, दूसरा आदमी, सिलसिला, बाज़ार, तेरे शहर में, अगला मौसम, लोरी*

फिल्म-संवाद : *अनुभव, सवेरा, इनकार, कर्मयोगी, चाँदनी, दीवाना।*

फिल्म-निर्देशन : *बाज़ार, तेरे शहर में, अगला मौसम* (हिन्दी), *वागदे पानी* (पंजाबी)।

टेली-फिल्मों का निर्देशन : *अपनी अपनी लड़ाई, प्रायश्चित, आख़िर कब तक।*

अप्रकाशित नाटक : *भूखे भजन न होय गोपाला, दूसरा आदमी, इंटरनेशनल क्लब, गुरु* ।

संपर्क : ए-604, शिवधाम, 62 लिंक रोड, मलाड (पश्चिम), मुंबई-400064

सारांश एक परंपरागत व्यावसायिक प्रकाशन का नहीं, इस क्षेत्र में नए मूल्यों – उच्च कोटि के लेखकों व स्तरीय पुस्तकों के चुनाव तथा मुद्रण-प्रस्तुतीकरण की गुणवत्ता के लिए प्रयासरत और मौलिक हिंदी साहित्य, हिंदीतर भारतीय एवं विश्व-साहित्य के अनुवादों तथा समाज-संस्कृति-अर्थ-राजनीति से जुड़े ज्वलंत सवालों पर प्रगतिशील वैचारिक लेखन से प्रतिबद्ध संस्थान का नाम है।

सारांश प्रकाशन

भारतीय एवं विश्व साहित्य का प्रगतिशील मंच